

नाम - विजयनाथ झा

पिता - पं. रतिनाथ झा

(पूर्व विभागाध्यक्ष प्राच्य दर्शन विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) वाराणसी

निवासी - ग्राम+पो० - तलपुरवा, बाँसी, सिद्धार्थनगर (यू.पी.)

शिक्षा - विज्ञान स्नातक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

वृत्ति - पत्रकारिता आ स्वतंत्र लेखन

आर्यावर्तक सम्पादकीय विभागमे विविध सेवा, [illegible] चिट्ठीक लेखन, आकाशवाणी आ दूरदर्शन पटनामे जखन-तखन कविता पाठ आ अन्यान्य [illegible] प्रसारण।

विविध पत्र-पत्रकारितामे हास्य-व्यंग्य आ आन तरहक लेखन।

कृति - मनबोधकृत कृष्णजन्मक मैथिली पद्यानुवाद (प्रकाश्य)

- रतिनाथ झा रचित कीचक वधक मैथिली पद्यानुवाद (प्रकाश्य)

- स्वांतः सुखाय, आध्यात्म विषयक पोथी (प्रकाश्य)

- आत्म बोध - आध्यात्म विषयक हिन्दी पोथी (प्रकाश्य)

अहींक लेल

विजय नाथ झा

अहींक लेल
• विजय नाथ झा

अहींक लेल

विजय नाथ झा

.....कविता!
तुंग-शृंग
समुद्र तल अछि
नद-महानदक पर्याय
शाकुंतलम् कालिदास
मानस-तुलसी दल अछि.
कविता !
पचि गेल त' सरल
नहि- गूढ़ गरल अछि शिवशंकरक
चन्दन वनक विषधर नाग सेहो
एकरा अनायास नहि छेड़ू
कामदेव धरि भस्म भ' गेल छथि
भ्रम पालने
कविताक आदि पुरोहितकें
सम्मोहनक झांसा डालने.

कविता !
जीवनक नैसर्गिक कहानी अछि
सरस-सुरवाणी अछि
बाल-वृद्धक संगी
सिद्ध साधकक अमृत रस-रानी अछि

कविता !
सारस्वत अछि !
स्वाभिमानी अछि !!

Cov. Design : Abhay Kr. Jha/09304429215

अहींक लेल

(गीत-गजल संग्रह)

अहींक लेल

गीत–गजल संग्रह

रचयिता : विजय नाथ झा

प्रकाशन वर्ष : नवम्बर 2008

प्रति : 350 मात्र

मूल्य – 150.00 टाका

शब्द संयोजन एवं आवरण : अभय कुमार झा

मुद्रक/प्रकाशक – शेखर प्रकाशन
टेक्स्ट बुक कालोनी
पटना - 800 024
मो० - 9334102305

पुस्तक प्राप्ति स्थान : 'भूमिका'
3MF, 3/42, भूतनाथ रोड, कंकड़बाग, पटना–26
मोबाइल : 9308430870, दूरभाष : 0612-2342068

Ahink Lel

Maithili Verse by Vijay Nath Jha

Price **:** 150.00



परमपूज्य बाबूजी– पंडित रतिनाथ झा
जनिक स्नेहिल छाहरिमे ज्ञानक
प्रथम पाठ ग्रहण कयलहुँ,
केँ ई पोथी सादर समर्पित–

-विजय नाथ झा

अहींक लेल

(गीत-गजल संग्रह)

विजय नाथ झा

प्रकाशक



शेखर प्रकाशन

पटना – 24

प्राक्कथन

हमरा प्रसन्नता अछि जे कवि श्री विजयनाथ झाक पहिल मैथिली काव्य-संकलन 'अहींक लेल' नामसँ प्रकाशित भ' रहल अछि। पछिला किछु वर्षमे ई काव्य-साधनाक क्षेत्रमे पर्याप्त समय लगौलनि अछि, जाहि कारण हिनका प्रति हमरा-सन बूढ़ लोक सभक धारणा सेहो किछु बदलल अछि। ई छान्दिक चेतनामे निष्ठा रखैत छथि आ आशा करैत छी जे आगाँ गति-यतिपर सेहो ध्यान दैत रहताह। हम अनुभव कयलहुँ अछि जे हिनक जागृति अनुप्रास आदि अलंकारक दिशामे सेहो छनि, जे नीक बात अछि। मूढ़तावश वैदेशिक दर्शनमे विश्वास कयनिहार तथाकथित कवि लोकनि रस, अलंकार, पद-लालित्य, शब्द-विन्यास, स्वदेशी संस्कृति आदि काव्य गुणकेँ बिसरि रहलाह अछि जे लक्षणक बदलामे कुलक्षणक आभास दैछ। ओ सभ 'का विद्या कविता सुललिता विना'- सन महाकाव्यकेँ सेहो बिसरि रहलाह अछि, जाहिसँ साक्षरताक बदलामे निरक्षरताक प्रसार भ' रहल अछि। स्पष्ट शब्दमे कहल जाय, तँ ई कवि-कुलक संस्कार नहि मानल जा सकैत अछि। जे अपन भूगोल आ अपन इतिहासक अनादर करैछ, ओकरा नीक कवि कहब सेहो कठिन कार्य अछि। ई विदेशी संस्कारक परिचायक अछि आ एहन संस्कारमे पोसायल व्यक्ति ने कालिदास कहा सकैछ आ ने भवभूति, जयदेव अथवा विद्यापतिये।

विजय नाथ जी आस्था आ विश्वासक कवि थिकाह, केवल विवशतापर कननिहार कवि नहि, ओ कहैत छथि 'केहन कारण निवारण नहि।' ई कर्मयोगमे निष्ठा रखैत कहैत छथि जे-'कहब केहि लेल लाचारी।' एहि संग्रहमे ई अपन रागी आ अनुरागी स्वभावकेँ सेहो उजागर करैत लगैत छथि-

बेस किछु अनुराग चाही
पुष्प चाही, ताग चाही !
भेटता हरिहर घरे-घर
उत्स चाही, जाग चाही !!

एहि संग्रहक किछु काव्य-रचनाकेँ गजल कहल गेल अछि मुदा गीत मालक छन्दमे लिखल जाइछ आ गजल वार्णिक छन्दमे होइछ। जे-से, एकटा समता तँ दूनूक छन्दमे रहिते छैक आ ओ अछि गेयता। विद्यापतिक गीतमे जे भनिता अछि तकरे ग़ज़लमे 'तखल्लुश' कहल जाइछ। अही हेतु हमर मान्यता अछि ग़ज़लक

आविष्कारक सेहो विद्यापतियेकेँ मानल जयबाक चाही। ज्ञातव्य अछि जे अरबी-फारसीमे सेहो चौदहम शताब्दीसँ पहिने कोनो काव्य-रचनामे भनिता किंवा 'तखल्लुश' केर प्रयोग नहि पाओल जाइछ हमरा जनैत। विजयनाथ जी अपन कथित ग़ज़ल सभमे मैथिलीक तथा तत्सम शब्दक प्रयोग कयलनि अछि, अत: कोनो आखरमे नुक्ताक प्रयोग करबाक प्रयोजने नहि। देवनागरी अथवा तिरहुता वर्णमालामे नुक्ताक प्रयोजन होइतो नहि छैक किएक तँ हमरा लोकनि अल्पप्राण वर्णकेँ अल्पप्राण आ महाप्राणकेँ महाप्राणे मानि क' भाषा वैज्ञानिक दृष्टियेँ उच्चरित करैत छी। खुदा आ ज़ुदाकेँ नुक्ता लगा क' फराक करबाक अभ्यासी हमरा लोकनि नहि छी।

समकालीनताक राजनीतिक चक्रमे फँसने आजुक कवि-लेखक राष्ट्रीय संस्कृतिकेँ उपेक्षित रखैत छथि। ओ सामाजिक सरोकार केर रटल-रटाओल बात तँ करैत छथि, मुदा लोक-मंगलक शाश्वत संस्कार दिस ध्यानो नहि दैत छथि। ई प्रसन्नताक बात अछि जे विजयनाथ जी शाश्वत काव्य-संस्कारक परम्परा-सापेक्ष आधुनिक कविक रूपमे उभरलाह अछि। शुभानि सन्तु !

भादव पूर्णिमा
मो. 9334206407

—मार्कण्डेय प्रवासी

दू शब्द

पत्रकार विजयनाथ जी एक कुशल कवियो छथि से हमरा बहुत बादमे ज्ञात भेल। प्राय: दस वर्ष पूर्व ओ हमरा अपन किछु कविता पढ़ि कऽ सुनौलनि। हमरा कविता नीक लागल। तहियासँ आकाशवाणी पटनाक 'भारती' कार्यक्रममे हम हुनका कविता पढ़बाक लेल आमंत्रित करय लगलियनि। परिचय निकटतामे बदलैत गेल। आ, तकर बाद कविता, गीत, गजलक क्रम चलैत रहल। एतेक धरि जे वियजनाथ जी सँ हम रेडियो नाटक सेहो लिखयबामे सफल भेलहुँ।

कोनो कविताक मूल्यांकन करबाक शास्त्रीय ज्ञान हमरा नहि अछि। तेँ कविताक गुण-दोष पर अपन विचार सेहो नहि दऽ सकैत छी। हम कविताक मात्र पाठक छी। कविता पढ़ब आ सुनब हमरा नीक लगैत अछि। जे नीक लगैत अछि तकरा नीक कहैत छिऐक आ जे नीक नहि लगैत अछि तकरा नीको नहि कहैत छिऐक।

विजयनाथ जीक जतेक कविता आ गजल हम सुनने-पढ़ने छी ताहिमे हमरा हिनक भाषा अभिजात लगैत अछि। कतौ-कतौ बुझबामे असौकर्य होइत अछि। ई कविताक कोनो दोष नहि, अपितु हमर अज्ञानता थिक। ई तँ मानल सत्य अछि जे काव्य-भाषा कविक आंतरिक भाव-विचारकेँ पाठकक समक्ष व्यक्त करबाक माध्यम अछि। रचनाकार मे भाषाक शक्ति आ सीमाक बोध रहैत छैक। भाषा कविक भावानुसार चलैत अछि, जतय जाहि प्रकारक आवश्यकता पड़ल भाषा स्वत: ओहिना बनि गेल। कहबाक अभिप्राय ई जे विजयनाथ जीक कविताक भाषा हिनक इशारा पाबि स्वत: बदलि जाइत अछि। यैह कारण अछि जे हिनक अधिकांश कविता (जे हम पढ़ने-सुनने छी) मे जतऽ एक दिस संस्कृतक तत्सम शब्दक बहुलता अछि तँ दोसर दिस देशज शब्दक प्रचुर प्रयोग देखय मे अबैत अछि। हिनकर अधिकांश कविता मे छान्दिक मर्यादाक यथोचित निर्वाह सेहो एकर कलात्मक सौष्ठावकेंर अभिवृद्धि करैत, रस-अलंकार प्रभृति विधानक मान्य परम्पराक रुचिगर प्रयोग केने कविताकें बेस प्रांजल बनेबामे समर्थ भेल अछि।

करुणाक भावना, कोमल कल्पना, सजल अनुभूति शब्दक माध्यमसँ आकार ग्रहण करैत अछि। ई शुद्ध भावनाक कवि छथि। जाहि ठाम वाह्य संघर्षक हलचल एवं समस्या ,नहि छैक, अपितु ओकर एक फराक संसार छैक, जतय सदैव वेदनाक मेघाच्छादित आकाश छैक।

विजयनाथजी मूलतः भावनाशील-कल्पनाशील कवि छथि। दार्शनिक मानवीय चिन्तन ओकर आवरण मात्र अछि, ओकर आधारभूमि। कविक एहि कलात्मक व्यक्तित्वक उन्मेष सहजहिं स्वच्छंदतावादी प्रवृतिक रूपमे भेल अछि। क्लासिकल मर्यादावादी प्रवृत्ति ओकरा संतुलित आ मर्यादित सामाजिक रूप प्रदान करैत अछि, यथार्थवादी प्रवृत्ति ओकर वास्तविकताकेँ जीवंतता प्रदान करैत अछि आ मानवतावादी प्रवृत्ति ओकरा उदात्त बनबैत अछि।

मैथिलीक अन्य कविये जकाँ विजयनाथजी काव्यमे प्रकृतिक महत्व अछि। हिनक प्रकृति-कवितामे प्रकृति जड़ नहि, पदार्थ नहि अपितु सचेतन अछि। प्रकृतिसँ हिनका नव दृष्टि भेटल छनि।

विजयनाथजीक कविता सभक एक संग्रह छपि रहल अछि, ई जानि अत्यन्त प्रसन्न छी। एकर स्वागत सुधी पाठक समाजमे होयत से विश्वास अछि।

– छत्रानन्द सिंह झा
17.08.08

पुरोवाक्

कोनो पोथी प्रकाशनक क्रममे ओकर भूमिका लिखबाक परिपाटी कोनो नवीन नहि। पाठक स्वयं एतबा सुधी आ मनसा प्रांजल होइत अछि- तेँ एहि पर कोनो तरहक टिप्पणी अनुचिते ने। तथापि कोनो कवि, गद्यकार, व्यंग्यकार वा नाटककार अपन रचनाधर्मिता पर किंचित प्रकाश एहि कारणे द' देब आवश्यक बुझैत अछि- जाहिसँ प्रकाशित पुस्तकमे अन्तर्निहित कथ्य, शिल्प, संदेश वा साहित्यिक अन्यान्य गुण-धर्मकेँ तदरूपेण आत्मसात करबामे पोथी पढ़निहारकें कतहु कोनो संशय किंवा अर्थजन्य ओझराहटि नहि होय। कोनो रचना, संरचनामे जखन कोनो रचनाकार, जे साहित्य शिल्पक प्रारूप ठाढ़ करैत अछि त' रस, अलंकार, छंद आदिक निवेश जौं कविता केँ गेय बनबैत अछि त' दोसर दिस काव्यगत चमत्कार आ प्रयुक्त लाक्षणिकता कविता केँ 'काव्यं रसात्मकं वाक्यम्' केर प्रस्तोता बना दैत अछि। काव्य वैभवक भव्य विन्यास आर तकर सहृदय संवेद्य प्रभावक शब्दचित्रे कविता कहाइत अछि। आ ताहिमे परिपक्व भावक संज्ञारस काव्यक आत्मक केँ इंगित करैत अछि। सोझ शब्द मे कहल जा सकैत अछि जे काव्यक गेयता जौं ओकर प्राणतत्व थिक त' रस, अलंकारादि ओकर शारीरिक संरचना-तत्व। एहि काव्यात्मक परिपूर्णताक लेल तहिना यति-गति लय, तुक आदि ओ अलंकरण थिक जकर सन्निवेषसँ कविता कामिनी मन बुद्धि आ भावक विशाल आयतमे अपन अजस्र लालित्यक शिरोरेखा खिचबा मे पूर्ण समर्थ भ' जाइत अछि। विद्वान लोकनि कविताक विषयमे अपन स्पष्ट मन्तव्य दैत कहैत छथि जे- जतए बुद्धिचातुर्यकेँ बलवान बनेबाक आशुता निहित अछि, ओत्तहि एकर अभिव्यंजनामे मनकेँ परिष्कृत करबाक असाधारण क्षमता सैहो विद्यमान अछि। एही सब विशेषताक कारणे ई जनमानस केँ मंत्रमुग्ध करबोमे ततबे समर्थ आ सम्पन्न सिद्ध अछि।

साहित्य हो किंवा अध्यात्म एकर सभसँ पैघ आ समर्थ अध्येता पाठके मंडल होइत अछि, अही भावकें हम मनमे रखैत 'त्वदीयं वस्तु गोविन्दं तुभ्यमेव समर्पितम्'क लेखे एहि कविता-पोथी नामकरण 'अहींक लेल' कएलहुँ अछि। हमर दृष्टिमे कोनो तरहक काव्य (साहित्य) केर श्रवण

वा पाठनसँ लोककें जौं सुखानुभूति नहि भेल त' ओ लब्ध प्रतिष्ठ कविता नहि भेल। तेँ एहि पोथीक संदर्भ मे एकर निर्धारण पाठके मंडल पर छोड़ब बेसी उचित। हमर ई पोथी दू भागमे संकलित अछि। सौविध्यवश एकटा गीत प्रभाग आ दोसर दिस गजल-संग्रह। अपनत्वक संबंधेन सब कविके अपन रचना नीके लगैत अछि। महाकवि तुलसी एहि कथ्यकें पुष्ट करबाक लेल कहनो छथिन– 'निज कवित्त केहि लागि न नीका, सरस होहिं अथवा अति फीका।' तेँ हमरो कविताकें नीक वा अधलाह हेबाक निर्धारण पाठके वृन्द पर केन्द्रित अछि। हमरा उत्सुकता सँ एकर सम्यक निरूपण बुझबाक जिज्ञासा रहत।

काव्यक श्रीगणेश आदि कवि वाल्मीकिक क्रौंचबध सँ मानल गेल अछि। काव्यक उद्गम वियोगात्मक शोकसँ प्रस्फुटित भेल अछि। एहि घटनाक जन्मवृत्तिए ई इंगित करैत अछि जे जीवमात्र सुख आ दुखक सुदीर्घ व्यापारसँ प्रभावित रहैत अछि। आ कोनो कवि ताहिपर जौं संवेदनशील साहित्यिक विमर्श करैत अछि त', ओकर मानस तद्जनित प्रभावसँ एतेक गह्वरित भ' जाइत अछि जे ओ अपन भावावेगकेँ कविताक रूप द' दैत अछि। एतए कहब आवश्यक जे कविक सधल आ सूक्ष्म दृष्टिकेँ यथावत देखि सकबामे सामान्यजन प्रायः भ्रमित भए जाइत छथि– मुदा कवि अपन काव्यधारा मे बहैत तेहन मर्मस्पर्शी तत्वक बखान करैत छथि जे सहृदय समाज लेल ओ अमृत कल्प भ' जाइत अछि। संभवतः एही विलक्षणताक कारणे 'दर्शनाद् वर्णनाद्वापि लोके जाता कविः श्रुतिः, करे विद्वान लोकनि बेर-बेर चर्चा करैत रहलाह अछि। एहन गुणवत्तासँ ओत प्रोत गुण-धर्म सम्पन्न कविगणकें काव्यसृष्टिक प्रजापति कहल गेल अछि। कहल त' एतबा तक गेल अछि जे एहन कवि विश्वात्मक स्रष्टासँ अही सब वैविध्यक संवाहक भेलाक कारणे बेस पैघत्व प्राप्त केने अछि। कविक दृष्टि आ दृष्टिकोण दुनू सांसारिक सिद्धान्त सँ भिन्न पूर्ण स्वतंत्र होइत अछि जकर आस्वाद ओ अपन रचनामे भरैत रहैत अछि। तेँ काव्यकें लोकवृत्तिक विम्बग्राही दर्पण मानल गेल अछि। आ एहि दर्पणक विशेषता ई जे एहिमे लौकिल घटनासभक अननकूल (प्रतिकूल रूपो अनुकूल) परिलक्षित होम' लगैत अछि। एहि कथ्य प्रमाण मे उदाहरणक कोनो कमी नहि। कहबाक तात्पर्य जे कविशक्तिक अजस्र आवेग अप्रिय घटनाक्रमकें प्रियतामे परिणत

क' दैत अछि। रामायण मे एहन ढ़ेरो प्रसंग आएल अछि। एहि तरहें कुत्सित वा जघन्य कथाकनको कविक बुद्धि चातुर्य सँ तद्जन्य मलिनताकेँ प्रच्छालित कए दइत अछि। फलतः एहिमे प्रतिबिम्बित वृत्त लोकोत्तरक धरोहर बनि जाइत अछि। तैं कविक संसार नहि त' नियति सँ नियंत्रित अछि आ नहि दुख, मोह आदि अनभीप्सित संवेदनासँ संश्लिष्टे। ध्यातव्य अछि जे लोकमे जतए व्यभिचारी सभक संयोग दुख, अपकर्ष आ अप्रतिष्ठाक कारण भ' जाइत अछि– ओत्तहि काव्यमे इएह व्यभिचारीभाव 'रसौ वै सः' केर स्वरूप धेने 'परमानन्द माधवम्'क निष्पादन कर' लगैत अछि। तैं शास्त्रकार लोकनि कविताकेँ आह्लादपूर्ण विषय कहि एकरा दुख, मोह, मात्सर्य आदि सँ सर्वथा असंतृप्त कहैत छथि। कवि कर्मक एहि पटुताकेँ देखैत कहलो गेल अछि 'यथास्मे रचते विश्वं तथेदं परिवर्त्तिते' ते अही सब विशेषताक कारणे कोनो सिद्धहस्त कविक विस्मृत आ आह्लादपूर्ण संसार एहि सृष्टिक कालजयी रचना बनि जाइत अछि। इएह कारण अछि जे 'कविर्मनीषी परभूः स्वयं भूः' सन आशुवाक्य कोनो प्रतिभा सम्पन्न कविकेँ सुकवि आ सर्वश्रेष्ठ बना दैत अछि।

काव्यक सब सँ बेसी महत्वपूर्ण पक्ष ओकर आशावादिता आ आनन्दबोध होइत अछि जकर प्रतिष्ठा पाबि कविताकामिनी इन्दु आ इन्दीवर (नीलकमल) सन विलक्षण भ' जाइत अछि। मुदा ई सब आख्यान कविताक संदर्भमे सैद्धान्तिक स्वरूपक परिचायक भेल। काल परिवर्तनक संग-संग कविताक बृहत्तर क्षेत्रमे जे परिवर्तन भेल आ भ' रहल अछि– ओकरो किंचित चर्चा नहि केनाइ उचित नहि। आइ एहि काव्यानुशीलनमे बेसी बूझू त' प्रगति आ प्रयोगवादक नवीनता लोकक दृष्टिबोधकेँ अपना अनुकूल बनेबामे बेसी सचेष्ट लागि रहल अछि। आब प्रायः कविताक गेयता समाप्त कय आधुनिक कविताक प्रारूप ठाढ़ कएल जा रहल अछि। विम्ब आ प्रतीकक माध्यम सँ एहन कविता सबमे काव्य-सौष्ठव पद-लालित्य किंवा अलंकार वा अर्थगौरव आदिकें गौण करैत सम्प्रति एकटा नवीन काव्यधाराक सृजन भ' रहल अछि। छंदोबद्धतासँ एहन कविताकेँ कोनो सरोकार नहि। तखन त' कहबी अछि 'जकरे बजार आकरे चर्चा'। प्राचीन पद्धतिसँ कविता-सृजन बड़ सहज नहि। रस, अलंकार, छंद, यति-गति आदि मौलिक काव्यतत्वक समीचीन निर्वहन कोनो सिद्धहस्त कविए सँ संभव अछि।

आइयो अही काव्यशैलीक प्रतिष्ठित मान्यता बरकरार अछि। ओना नव प्रयोगक क्रममे हमर किछु छंदमुक्त कविता सेहो एहि पोथी मे सम्मिलित अछि, जे हमरा कोनो 'वाद' सँ असंतृप्त करबाक लेल पर्याप्त प्रमाण अछि।

वर्तनाम काव्यधारा गीत, गजल आ नवकविता सँ बेसी प्रभावित अछि। नवकविताक अपन भिन्न शैली अछि जाहिमे छंदक पचड़ा नहि जकाँ द्रष्टव्य अछि तथापि ओकर शिल्प, कथ्यमे भाव आ विम्बक तहन संयोजन देखना जाइत अछि- जे इहो विधा आब मनक तारकें छूबा-छेड़बा मे पाछा नहि रहि रहल अछि। मुदा दोसर दिस जतए कविता गेय नहि ओतए आदिक रस-अलंकार चर्चे फिजूल। परिवर्तन आ प्रयोगात्मक शैली लोकक गुणग्राही हेबाक परिचायक थिक। एना मे आशा, अभिलाषा एकर जौं पृष्ठभूमि त' शब्द संयोजन कविताक आत्मगौरव बुझना जाइत अछि। तैं कविता के हितकर आ हेतुकर दर्शनसँ पृथक राखब उचित नहि। एहि लेल साहित्यिक सौष्ठवसँ आप्यांसित (वर्धमान) तत्व शिरोमणि कविता कें हम बारंबार प्रणाम करैत छी।

एहि कविता पोथीक प्रकाशन मे हमरा जे जन-सहयोग आ संबल प्राप्त भेल- हम ताहि लेल सभक ऋणी छिअनि। खास कए श्री दिनेश चन्द्र झासँ जे मैथिली साहित्यक मर्मज्ञ अध्येता छथि' हिनक यथासमय अमूल्य सहयोग पाबि हम एहि प्रकाशकीय यात्राकें पूरा क' सकलहुँ अछि। संगहि बटुक भाइ (श्री छत्रानन्द सिंह झा) सँ सेहो तहिना उपकृत छी जे एहि कविता पोथी पर अपन मन्तव्य दए हमरा स्नेहसिक्त करैत कृतार्थ केलनि। मैथिली कविताक आजुक भीष्म पितामह श्री माकण्डेय प्रवासीक एहि पोथीक लेखे प्राक्कथन पाबि हम आभार व्यक्त करैत छी। एहि पोथी मे बहुतो कविता आकाशवाणी आ दूरदर्शन-पटना सँ प्रसारित होइत रहल अछि। किछु पत्रिका सब मे सेहो यदा-कदा ई रचना सब प्रकाशित भेल अछि। तैं पोथी प्रकाशनार्थ तदर्थ कृतज्ञता ज्ञापन आवश्यक बुझना जाइत अछि। पाठक दीर्घाकें एहि पोथीक कविता केहन लागल ई बुझबाक उत्कंठा बनल रहत।

विजयादशमी — विजय नाथ झा
09.10.2008

□

शीर्षक क्रम

अहींक लेल

जीवनक गति-प्रगति
शब्द संसार सित
गंध, सौगंध प्रिय
अर्थगर सार हित
भ' रहल प्राण-मन लोक-आलोक क्षण
हम अहींक लेल निरवधि निःशोक सन

काम उद्दाम नहि
शांत उद्वेग कहि
द्वन्द्व संशय केहन
युग्म अभिराम महि
भेल / तन आर्द्र बरसल उभय मेघ मन.
हम अहींक लेल निरवधि निःशोक सन..

संग लागल सटल
बिंब प्रतिबिंब जल
भेल फल प्रेयता
सृष्टिकारक सबल
पानि पूरक सभक सृष्टिधर सृष्टि कण.
हम अहींक लेल निरवधि निःशोक सन..

वस्तुतः राग बड़
माथ नहि मात्र धड़
ज्ञान घसकल जेना
नाम गोनू इतर

जीव जंगम भने गति अहीं छी शरण
हम अहींक लेल निरवधि निःशोक सन..

प्रश्न सदिखन रहल
के सटल - के बिरल ?
गाछ सब पात सँ
मूलतः माटि-जल

भाग्य पूरल भरल योग संयोग मन.
हम अहींक लेल निरवधि निःशोक सन..

गात टूटल खाट ई !

की कहब कारण केहन
जीवन व्यथा अछि.
आनुसंगिक मोह-माया
प्रेयता - प्रियता प्रथा अछि.
अछि कठिन निरपेक्षता स्वीकार्य दुर्घट बाट ई.
मन तकै अछि चैन लटकल गात टूटल खाट ई..

अछि केहन संत्रास; जग
मन मानल कहाँ ई.
हास अछि परिहास तैयो
ज्ञान से जानल कहाँ ई
सत्य सँ संबंध जोड़ब नहि ठोप, चानन ठाट ई.
मन तकै अछि चैन लटकल गात टूटल खाट ई..

अछि प्रयोजन ताकबा केर
आत्मपद आनंद लए.
कामना हो कामिनी सन
गेयता धन छंद धए.
आंतरिक-आभ्यंतरिक आलोक अंतस हाट ई.
मन तकै अछि चैन लटकल गात टूटल खाट ई..

नहि सहज जानल सरल की
बोध बिधुता क्लिष्ट ई.
हाथ धेने माथ बैसल
भोग्य जौं नहि दृष्ट की ?
अछि कठिन माया निसर्गक रोग अछि उच्चाट ई.
मन तकै अछि चैन लटकल गात टूटल खाट ई..

अहाँ कहने रही

ठीक अछि बाबूजी !
अहाँ एकदम ठीक कहने रही.
बेसी बाजब
आदमी लए ठीक नहि.
आगाँ बैसल लोकके
आँकि लेब चट्टहि / बुद्धिमत्ता नहि
बूड़ित्व सँ अभिभूत रहल अछि-
पोखरि आ पुरुषके थाह लेनाइ
ओहिना ठाढ़े-ठाढ़.
ई कोनो हाथीक बहराएल दांत नहि
अहाँ बिलकुल ठीक कहने रही
मनुक्खकें / मनक पाठशाला मे
पढ़ब बेसी जरूरी छैक
ज्ञानी गुरुसब सँ / पार पबैक लेल-
आत्मविश्वासक अनुभूति करैक लेल.
ठीके, आत्मीयताक अन्वेषण
जन्म आ जातकक प्रयोजन अछि
अहाँ मानी वा नाहि-
आइ घर-घर मे
अपन आप कें नहि चिन्हनिहार
बहुसंख्यक दुर्योधन छैक.
अहाँ ठीके कहने रही
अभाव व्यक्त केनाइ
पुरुषक लेल ठीक नहि
व्यक्ति आ व्यक्तित्वक अनादरो अछि ई.
नहि अछि ई कथमपि
जीवन्तताक लक्षण.
कायरता, कापुरुषताक
बिकारी आखर अछि ई
कारी खटखट
बेसी बजला सँ
नींक अछि दूरी आ खटपट।

वसंत

भेल वसंत व्याधि
आउ बैसू, कथा अछि.
अग्निवेश कामसूत्र
ससरि रहल, व्यथा अछि.
सभक सब गीत - मीत
बंद खुजल छंदमे
मधुकर मन नाचि रहल
छिड़ियाएल मकरंदमे
सरसीसँ सागर धरि
अंतस आकुलता अछि.
भेल वसुंत व्याधि-
आउ बैसू, कथा अछि..

फूटल नव कोपर तरु
तरुणी, तरुणाई-श्री
लोटि रहल लता-लट
आलिंगन अनुयायी ई.
ताकू वन-बाग, गिरि
निवेदन, आवेदन अछि
दान, अनुदान, प्राण
सर्ग संवेदन अछि.
कहल सुनल लाज नहि
प्रियगर चपलता अछि
भेल वसंत व्याधि
आउ बैसू, कथा अछि..

संधि अछि समन्वय ई
अंक, अधर अन्वय ई
गाम-शहर देस-कोश
विभुक्षा धरि अव्यय ई.
माधुर्यक स्वाद केहन
मधुवन सन, चाँन सन
उर-उरोज से उतान
लटकि गेल अंबर-घन.
शीत-ताप आदि अंत
आनन्द मौलिकता अछि.
भेल वसंत व्याधि-
आउ बैसू, कथा अछि..

व्याधि

भेल अछि विस्मय सकारण कारुणिकता की कही !
बहि रहल तैयो नदी मन सांत्वना अछि घन मही !!
नहि चिरंतन क्लेश भारी
रूप नहि लावण्य कारी
भोग लए सुख-दुख जरूरी
जीव-जीवन अछि प्रभारी...
अति सहज तैं ध्यान नहि ई साध्य नहि बूझल सही !
बहि रहल तैयो नदी मन सान्त्वना अछि धन मही !!
ज्ञान अछि अनुमान धेने
गंध अछि सब घ्राण भेने
तेज अंतस आत्मना ई
स्फूर्त रवि दिनमान केने..
अछि पढाई नहि कठिन गुरु आप जौं अपने कही !
बहि रहल तैयो नदी मन सान्त्वना अछि घन मही !!
अछि प्रयोजन की कही हम
एहि पसारक नहि सही क्रम
वार्धक्यक कामना आराधना
कामिनी, कंचन-रही हम..
बेर क्रमशः कहि रहल अछि बान्हि ई भाभट रही !
बहि रहल तैयो नही मन सान्त्वना अछि धन मही !!
मित्र अपने आप मानल-
रामजी ! रघुवर सँ जानल
भाव्य अछि संभाव्य श्रीकर
लक्ष्मी सँ विष्णु आनल..
योग विद्या, योग माया, योग निद्रा छी अहीं !
बहि रहल तैयो नदी मन सान्त्वना अछि घन मही !!

बाधा

गप्प हम आधा कही की
जीवनक बाधा कही की !
कामना शोषित - प्रताड़ित
तथ्य हम बाजी कही की ?
मान मंगने नहि मिलै अछि मोल नहि अनमोल ई !
फूल-फल सब स्निग्धता सन मधु मिलल जौं बोल ई !!
जीवनक स्वास्थ्य ताकल
कूप नहि मन आप झांकल.
नहि सहज सुखकर भने ई
चेतना धन ध्यान लागल.
अछि विषादक व्याधि पोसल कष्टकारक ढ़ोल ई !
फूल-फल सब स्निग्धता सन मधु मिलल जौं बोल ई !!
एक कुंठा अछि बली बड़
आदमी भए जाइ अछि जड़
मानलहुँ सब वेदना - संवेदना
घेंट नहि त' की करत धड़.
अछि कथा भीजल व्यथा सन स्वाद कबकब ओल ई !
फूल - फल सब स्निग्धता सन मधु मिलल जौं बोल ई !!
अछि प्रयोजन पानि सन- हैं !
नहि बन्हाएत जानि जन सँ
बालु मुट्ठी ई रुकत नहि
सुख सहजे नहि भेल धन सँ.
ज्ञान तकला सँ मिलत ई अछि नुकाएल झोल ई !
फूल - फल सब स्निग्धता सन मधु मिलल जौं बोल ई !!

योजना

औ बाबू, सुनू !
हमहूँ अहीं सन जागल छी
जोड़-गांठ मे व्यस्त
योग-संयोग तकैत
अहीं जकां हमहूँ
योजना बनवैत पागल छी
वैचारिक जारनि मे
कुचोद्यक दियासलाइ लगा
हम सब किछु अपने हाथे जारै छी
पराक्रम आ पौरुष देखेबा लए हम
आन नहि, अपन आप के मारै छी.
अहीं कहू - केहन विशिष्ट अछि / हमर योजना-
पानि जेकां पसरल / गोबर सन्न गील
सक्कत कतबो करू मुट्ठी
भ' जाइत अछि डाँड़ ढ़ील
बुझलहुँ त'
एहि ज्ञान सलाका सँ
भरैत छी - अपन पेट.
चरैवितक नवीन आख्या - व्याख्या मे
टेटरक कथे की
लटकल अछि घेंट भने
अनका लए व्यथा की ?
मेटि रहल अछि बिना शब्दे
अर्थक सुपरफास्ट खेप
गप्प दैत रहू एहिना-
सान्त्वना सरकारक
नहि कोनो साइज, नहि कोनो शेप.

निर्गुण स्वरूपक कतेक बखान करी
हम सब माथ पर / किएक नहि चॉन धरी
आंगुरक पोर पर रोपी धान
कल्पनाशील अछि बहुत
देशज विज्ञान.
भिक्षु सँ भिक्षाटनक वृत्ति [illegible]
पड़ा रहल देस सँ
नीक लोक जकां
के कहैत अछि
हम छी भिखारी
अपन हकक लेल
हकमैत छी संसद धरि
पोसिया कुक्कुर सन
खूब भोमिआइतो छी
नछोड़ै छी / ताकि ताकि क' लोक
कहै छी लागल रहू
भेंटत संयोग !
जीवनक पूर्णाहुतिक लेल
करैत रहू बंधु ! एहिना
योजना - प्रयोग
योजना - प्रयोग ।

जीवनक दिनमान कविता

अछि मनक विन्यास
चिंतन धन मनन.
शब्द बीथी मन मही
परिवेश उपवन.
हम प्रणेता हम प्रयोजन शब्द हम विज्ञान कविता !
दृष्टि मे अछि सृष्टि नूतन जीवनक दिनमान कविता !!
शब्द सुन्दर ओ
सरस हो सोझ हो.
लाक्षणिकता गूढ़
नहि कहि बोझ हो
कामना सरलीकरण यदि मान अछि सम्मान कविता !
दृष्टि मे अछि सृष्टि नूतन जीवनक दिनमान कविता !!
साधना साधन कठिन
चाहल न मानय.
ज्ञान नहि ढौआ धरल
क्यो ताकि आनय.
अछि समर्पण जीवनक अनुदान नहि– संधान कविता !
दृष्टि मे अछि सृष्टि नूतन जीवनक दिनमान कविता !!
सूर तुलसी आइ नहि–
घर-घर भने कवि कर्म अछि
अछि प्रगति पुरुषार्थ देखू
धय लेलक से धर्म अछि.
नहि विवादक विषय हो नहि आर नहि अज्ञान कविता !
दृष्टि मे अछि सृष्टि नूतन जीवनक दिनमान कविता !!

आदमी रहि गेल की !

जीवनक अन्वय समन्वय
आइ किछु बदलल लगैए.
पानि अनहद पानि घर-घर
माँटि सब दलदल लगैए.
डूबबा लए जन्म जिनकर संग केतबा भेल की !
आदमी बहिया बनल अछि आदमी रहि गेल की !!
याद नहि बाजू कही की
बाढ़ि केतबा बूढ़ ई.
प्राण नहि - प्रतिकार ताकल
अछि विकटता गूढ़ ई.
सब उबारै मे मगन धरि जानि सुन्दर खेल ई !
आदमी बहिया बनल अछि आदमी भए गेल की !!
अछि सनातन ई पुरातन
धर्म हिंसा जीव जग.
जे मुंहक जोरगर जहन
भेल दुनिया लेल सग
खा-पचाक' रोहु-पोठी- के कहैत बकलेल ई !
आदमी बहिया बनल अछि आदमी रहि गेल की !!
बाढ़ि सन नहि त्रासदी किछु
घोषणा सब बेर होइए
भेल तर्पण पानि पी-पी
वार्षिकी हर बेर होइए
चलि रहल सब योजना सन मेल नहि बेमेल ई !
आदमी बहिया बनल अछि आदमी रहि गेल की !!

हंसि रहल रसराज सावन

अछि ललित अभियान
सावन अछि सरस.
आउ प्रियतम आउ
चाहै छी दरस.
झहर-झहर बरसि रहल जीवनक रसराज सावन !
सात्विकी मन जरि रहल हँसि रहल रसराज सावन !!
अछि कतेक उत्कर्ष
सुख सौभाग्य की.
युग्मता अभिषेक तन मन
चारुता अनिवार्य ई.
शिष्टता आंचर उड़ेने जा रहल सुखराज सावन !
सात्विकी मन जरि रहल हँसि रहल रसराज सावन !!
जीवनक पांती समाहित
सिन्धु-सरिता संधिमे.
भेल छी पुलकित उभय
डूब दय-दय बंधिमे.
आउ संग-संग तृप्ति पाबी कहि रहल निर्लज्ज सावन !
सात्विकी मन जरि रहल हंसि रहल रसराज सावन !!
वारुणी वर्षा अहर्निश
दामिनी दम-दम ढ़रल.
बाँहि पसरल केश कारी
मोहिनी सन्मुख सरल.
एहि सुखक सीमा न कोनो जीवनक अछि साज सावन !
सात्विकी मन जरि रहल हंसि रहल रसराज सावन !!

संभावना

जहिया कहियो चरचा होएत
शब्द सिन्धु संसार के
धरती, पाथर, मेघ, गगन धरि
बाजत नाम उचारि के
सारस्वत साधक अध्येता
के जीतल सब हारि के ?

वचन कोन जे स्वर नहि भेटल
अन्तर्मुख परिचय अनजान
घूमि-घामि बैसल घर अपने
बूझल एतबे ज्ञानक मान
संगी हमर सारथी मनटा
सुख भेटल सुख जारि के !!

रीति पुरातन नवल जीव-जग
गमनागम धरि लोकाचार
पीठ प्रशंसा अरचा अक्षय
मौलिकता मानस व्यापार
बाट-बटोही फल खाएत ई
छाहड़ि पल्था मारि के !!

कालिदास, भवभूति आइ धरि
आबि रहल छथि भए ऋतुराज
कुसमाकर लए स्वागत सगरो
मधुबाला लालायित आज
कामदेव चानन जल पूरल
लेप सुखद सब नारिके !!

आयोजन सब आर कहू की
मधुर-मिलन मुखरित मधुमास
तरुवर बेस भेल तर-उप्पर
चूबि रहल बरखा विश्वास
भोग कठिन भागव नहि संभव
धरिऔ सोचि-विचारि के !!

शाश्वत

व्यसन केहन संताप श्राप सन पीड़ित मन परिहत किछु आइ !
घूमि-घाम हम देखल जानल राम नाम आजुक अछि पाइ !!
दिन दुष्कर सायं अछि भरिगर
नचा रहल संसार भ्रमर.
ठाढ़ हेबाकेर ठौर न निश्चित
भेल जलाजल जहिना घर
यायावर जीवन जानल नहि अरजल की अछि कहिऔ भाइ !
घूमि-घामि हम देखल-जानल रामनाम आजुक अछि पाइ !!
कुरुक्षेत्र धरि समर न जीवन
अछि सुदीर्घ गन्तव्य कठिन.
पाओल पार कहां क्यो कहियो
कारण कोन भेल ई दिन.
पराभूत बूझल अर्जुन हम भेल विजेता कृष्ण-कन्हाई !
घूमि-घामि हम देखल-जानल रामनाम आजुक अछि पाइ !!
नहि शाश्वत अछि जीव जगत ई
प्रलय पाबि गिरि काल्हि ढ़हत ई.
जीवन ई तैं सभक क्षणिक-क्षण
रहल न बैसल भेल विगत ई.
सीमित बड़ अवसर बाचल अछि जागू उठिऔ एखनो भाइ !
घूमि-घाम हम देखल जानल रामनाम आजुक आछि पाइ !!

रत्नक खजाना

अजीब बात अछि !
संसार के सैह सूझैत अछि
जे वस्तुत: अछिए नहि !
आर जे अछि-
तकर कोनो मोले नहि !!
बजबैत छी दुनू हाथे
कहैत छी ढोले नहि !!
जीवनक धर्म बनल-
गति-प्रगति/आ संगति सुरक
साधना सारस्वत
मंदिर हो किंवा घर
चाही सर्वत्र लयता/समर्पण.
प्रबल अछि संभावना
प्रयोजन तहिना
चाही दर्प आ दर्पण.
बाधक मध्यस्थ जे
करू कात
दृष्टि खोलू अंबर सन
खोलू मनक ग्रन्थि
पसरि रहू बनि मेघ.
वन-उपवन भेटैत तखनहि
मलयागिरिक झहरैत मधुवात
सांझ होइ कि प्रभात
मनक आंगन मे सौंसे.
मरि जाएत गीत
अहीं सन स्निग्ध, अकिंचन
हजारो-हजार पुष्प धवल
पारिजात सन बिछौन.
तैं जरूरी इहो जे
तरवा करय अहाँक
माँटिक स्पर्श
अहूमे अहाँक
रक्ताम कपोलक लालिमा छैक
कमलनीक लचलच कमनीयता सेहो !!
मादकता, मोहकता
अनुष्टुप गढ़ैत.
जागल अछि भोर
चिड़ै सब चह-चह
प्रतीक गीत अछि इजोतक
ई सुख-स्वर्गो मे नहि सुलभ
तैं बंधु ! एहि लोक
सभक आवाजाही अछि
धरती ई माँटिक पिण्डे टा नहि
कहल ब्रह्मवैवर्त
रत्नक खजाना सेहो !!

अतिशयता

कखनहु भाइ, हमहूँ
अपन पीठकें
अपनहि ठोकबाक क्रमे-
की सब नहि कहि जाइत छी
नहि कहि.
श्रोता सब भए जाइत छथि बहीर
बंद क' लेइत छथि दुनू कान
बुझैत खाली खोली सँ
भरल अछि दुकान.
जनैत सब लाफ्फाजी अछि
भगवानक पता नहि–
फूल अछि / साजी अछि.
साहित्यमे एकरे दोसर नाम
ढीलब अछि.
तिल सँ ताड़ बनेबाक परिपाटी
एहिना सब सीखल अछि
इएह अछि साहित्यिक हांकू कला
हकनाइयोमे की वाह-वाह अछि
पाँनिक पता नहि–
घैल बड़ अथाह अछि!

शब्दश:

शब्द अछि सामर्थ्य जीवन
शब्द धन संधान अछि.
शब्द सँ संसार जीवित
शब्द सँ निर्वाण अछि.
ध्यान राखू के अहाँ कारण केहन संत्रास ई !
जीवनक विन्यास विघटन शब्दश: सब न्यास ई !!
अर्थ पूरल शब्द सँ सब
जल-जलज, सागर, सुधा.
पी रहल जग जानि गंगा
वारुणी गर्हित मुदा.
प्रेयता-प्रियता परस्पर नहि उचित परिहास ई !
जीवनक विन्यास विघटन शब्दश: सब न्यास ई !!
संधि ताकल साधना सन
युग्म तन-मन नहि बनल.
बेस बुधिबधिया कहू की
यज्ञ आजुक भेल छल.
आचरण पशुता, पुरुष, पुरुषार्थ, पसरल हास ई !
जीवनक विन्यास विघटन शब्दश: सब न्यास ई !!
द्वन्द्व द्विविधा मे हेड़ाएल
भ' रहल भ्रम कष्ट अछि.
चाहलहुँ उपलब्ध से नहि
कर्म कारण भ्रष्ट अछि.
हारलक जे भूमि-रण ई - होएत कहू इतिहास की ?
जीवनक विन्यास - विघटन शब्दश: सब न्यास ई !!

कविता

जीवनक विज्ञान कविता
जीवनक सम्मान कविता.
अछि रमनगर सांझ सन ई
जीवनक दिनमान कविता..
शब्द अछि संसार जिनकर
अर्थ सागर सार तिनकर.
दास तुलसी आस रघुवर
वास अछि भगवान कविता..
चिर युवा युवती रहल ई
पान मुख पौती रहल ई.
लाल टुहटुह ठोर, जिह्वा
अक्षरित सन्तान कविता..
व्यंजना शृंगार पूरल
जल-जलज घन भेल घूरल.
कर्म-कारण बालुका धरि
रुद्र कण-कण प्राण कविता..
अछि हृदय घर बास घरनी
स्वांस अछि उच्छ्वास भरनी
कीर्ति किछु लतरल लता सन
जीवनक उत्थान कविता..

कहू केहन भगवान अहाँ छी !

सोचि-सोचि थाकल मारल मन
कतेक मनोरथ छल हारलं प्रण.
रोंम-रोंम धरि तृषा रिक्तता-
हम अतृप्त !
श्रीमान् कहाँ छी ?
कहू केहन भगवान अहाँ छी !!
हत-आहत हम क्षोभ प्रबल छी
काम, क्रोध, मद, लोभ गरल छी
रज्जु हाथ बांटल अभिलाषा-
नहि निरोध !
निर्वाण कहाँ छी?
कहू केहन भगवान अहाँ छी !!
दिशाहीन गतिशील काज की
व्यर्थ भ्रमण भए रहल लाज की
केहन प्रयोजन-कारण की सब
विपदा एहि !
गुरु ज्ञान कहाँ छी ?
कहू केहन भगवान अहाँ छी !!
योग्यता अधिकार संशय
नहि सहज प्रतिकार जय-क्षय
मन अधक्की कामना बलवान
मधुर मधुमान कहाँ छी ?
कहू केहन भगवान अहाँ छी !!
की कहू अपराध की सब
नहि निवारण साध्य ई सब
क्षुद्रता, दारिद्र्य थाती
ध्यान योग उत्थात कहाँ छी ?
कहू केहन भगवान अहाँ छी !!

जिजीविषा

हम कल्पना करैत-करैत
स्वयं अकल्पित भ' गेलहुँ.
की कही-
जीवनक एहि प्रमाद
आ ऊहापोहक व्यथा !
नहि पता-
केहन अछि/मनुक्खक जिजीविषा
पाथरो सन जड़ होइत अछि
किछु किछु स्पृहा
इतिवृत्ति एतबे.
फाँकि रहल मूढ़ी मन
पेटू अथाह !
जीवनक कर्ज बहुत
माथ धेने बैसल छी
कर्जक घड़ारी
उधारी मे पैसल छी.

जीवन जिज्ञासा जतए
एक नहि एक सै
अश्वमेध पूरत ओ
पुरुष अछि बाजू कै?
परिचय अपन अछि की
'जानू त' बात कही
राणाक मोंछ सन
ठाढ़ दिन-राति रही
मनोरथ सब पूरत-
आनि-अबगरानि जतए
पौरुषसँ पैघ की
दृढ़ता संग ज्ञान जतए
भेटत अभीप्सित फल
काम, धाम, स्वर्ग ओ
कर्म, कर्मकांड प्रिय .
सुजान सब मनुक्ख हो !!

जीवनक सत्य

की कहू भाइ !
कतए बौआ रहल छी.
जनैत सत्य-जीवनक
असत्य लेल
अपना आपकें भजा रहल छी.
जनैत छी
किछु होएत नहि नवीन
पाइ भेने की–
रहब हम सब/दीन के दीन.
बुझबाक प्रयासो त' नहि
कहल जाइए नहि
कहलके बेर-बेर कहि.
दुराचारक नचारीसँ
शिव के जगा रहल छी
असत्यक लेल
अनका नहि
अपन-आप के भजा रहल छी.
व्यंजना-अभिव्यंजना
सब छिड़िया गेल अछि
धैर्यक चौकठि धेने-धेने
की करब बाजू अहाँ
दिवास्वप्न भेने.
दिशाहीन, दशाहीन मन:स्थिति
किछु नहि सोहा रहल अछि
विन्यस्त अछि विवशता-
आ हम
कांटक ठाट सजा रहल छी.
असत्यक लेल
अनका नहि
अपना आप के भजा रहल छी.

प्रकीर्ति

अछि कथा इतिहास गर्वित
भगवती भव नाशिनी
सार सारस्वत प्रवाहित
गति, सुमति, सुखदायिनी..
लोक आलोकित अहांसँ छी पतन – उत्थान अपने !
बिन्दु हम छी सिन्धु माते सलिल शीतल ज्ञान अपने !!
अर्थ सबटा व्यर्थ बूझल
वस्तु नहि विन्यास सूझल
भेल आन्हर, ऊहि भारी
काज सबटा भेल अलबल..
एहि विवेकक शुद्धता लए योगमाया ध्यान अपने !
विन्दु हम छी सिन्धु माते सलिल शीतल ज्ञान अपने !!
छी अहाँ अपराजिता माँ
पाथरक नहि मूर्ति कहि
भरल-पूरल भव्य चिन्मय
भाव धेने स्फूर्ति एहि.
छी अहीं विश्वास वैभव, नियम, निष्ठा, त्राण अपने !
विन्दु हम छी सिन्धु माते सलिल शीतल ज्ञान अपने !!
देव – दानव द्वन्द्व मुखरित
आइयो हर-हर बहै अछि
आचरण प्रतिलोम भाषा
अर्थ किछु तहिने कहै अछि..
बूझबा केर फेर सब किछु मन-मनोरथ प्राण अपने !
बिन्दु हम छी सिन्धु माते सलिल शीतल ज्ञान अपने !!

संशय

बदलैत मान्यता सभक
आकलन-संकलनमे
बंधु !
संसारे ससरि रहल अछि.
वैश्वीकरणक आगि
कतौ धुधुआ रहल-
त' कतौ झरकि रहल अछि
सड़ल मुर्दा सन.
लोकक आचारो-विचार
परिष्कारक नव परिधान/पहिरने तहिना
अधोमुखी पतनमे
गतिशील अछि
विगत संबंध-अनुबंध सबकें बिसरि
नित नवीन प्रबंधक व्यामोहमे
ओझराएल जा रहल छी.
बाजी त' बाजी की ?
प्राप्तिक नाम पर भेंटल अशांति सँ
अपने मरल जा रहल छी.
फलाफलक विचार केने बिना
हमहूँ त' ओहिना
गाछक नाम पर
कुश-कांट लगा रहल छी
घर कें कैक्टस सँ सजा रहल छी.
अपन घिनाओन आचरण देखबै लए
पंकक अनुकरणक' रहल छी.
आर बुधबधिया करैत
पानि मे गोबर धए रहल छी
मनोरथक सेतुबंध बनेबा मे
अस्थि संचयक प्रक्रिया
स्वयमेव साधि रहल छी.
लोक-प्रशंसाक मोटा
अपन माथपर / लादि रहल छी.
जनैत इहो-
जे संकलनक नाम पर
रद्दीक टोकरियो
हाथ नहि आबय
आ विक्षिप्त मन हमर एहिना
बौआइत हकमाबय..

कोनो आनि नहि

अछि केहन दुर्योग
पावस पानि नहि
मेघ अछि निर्लज्ज कोनो आनि नहि.
आँखिमे अछि अग्नि तरवा जरि रहल
हाथ माथा अछि कृषक सब मरि रहल.
जानि नहि आगां - कठिन आभास अछि
धान हरियर खेत कुश भय जरि रहल.
अछि केहन की योग
फल की - जानि नहि
मेघ अछि निर्लज्ज कोनो आनि नहि.

मन केहन फाटल
सटल संयोग नहि
भेल असहज कष्ट कारण जानि नहि.
पानि बिन संसार सौंसे जरि रहल
भेल ठकमारल ह्रदय दुख झरि रहल.
मृत्यु लागल जीवनक ई रोग अछि
जीवनक इतिवृत्ति की-की भोग अछि.
विश्वव्यापी जल-प्रलय दुर्योग
सहू सब ग्लानि कहि
मेघ अछि निर्लज्ज कोनो आनि नहि.
काल बड़ विकराल
निवारण नाम नहि
भेल आकुलता कठिन व्यग्रता धरि चाँनि अछि.
भ' रहल की जानि नहि सब कहि रहल
मेघ लागल मेघ भागल बहि रहल.
नहि पता की इन्द्र ! हाहाकार अछि
बोल सब बड़ बोल सन बेकार अछि.
अछि जरूरी खोजिऔ से दोग
प्रलय-बिन पानि एहि
मेघ अछि निर्लज्ज कोनो आनि नहि !

जीवनक अनुभव कहै छी

जीवनक अनुभव कहै छी
व्याधि हम नव-नव कहै छी
योजना विस्तार सदिखन
बंधनक ससरब कहै छी
सत्य सन नहि विषय कोनो
पानि सन पसरब कहै छी
जीवनक अनुभव कहै छी.

होम होएब रोंम जानल
नोर झरझर आँखि कानल
पास जे सब खास अप्पन
गप्प किनको तैं न मानल
भोग एहि संयोग बूझल
बुद्धिकेर घसकब कहै छी
जीवनक अनुभव कहै छी.

जरि रहल परिताप प्रतिपल
आसवन विश्वास नभ जल
आ रहल आषाढ़ झमझम
तृप्ति लए धधकल अधर दल
माँटि-पानिक प्रीति पौरुष
चू रहल टपटप कहै छी
जीवनक अनुभव कहै छी.

दृष्टि चाही सृष्टि मूलक
अछि जरूरी छुटल ई भक
मेल अनुमानित प्रमाणित
ज्ञाने गोनू आर्त सुख जग
स्वाद मधु रस होंठ राखू
शब्द सुख शिव भव कहै छी
जीवनक अनुभव कहै छी.

व्यंजना विन्यास विनमय
भ' रहल विश्वास जय-जय
प्राप्त जे सब कम न किछुओ
भेल किछु आभास – संशय
गल्प नहि संकल्प साधू
सुखक सुर हम लय कहै छी
जीवनक अनुभव कहै छी.

गप्प नहि जानल कहै छी

मन भ्रमर मधुमक्त मधु सन
रूप धरि कारी हमर
परिभ्रमण, संवेग संयम-
मधुप मानुष मन भ्रमर
नहि पता विश्राम कहिया
नोर हम कानल कहै छी
गप्प नहि जानल कहै छी.

नींक सोचब नींक होएत
ठाढ़ अछि आनंद पगपग
लय मलय संग भेल रसगर
नहि उचित परिहार लग सग
शांति लए संताप ओढ़ल
यज्ञ हम ठानल कहै छी.
गप्प नहि जानल कहै छी.

सुलभ नहि जे सब बराबरि
काम सुन्दर कामना से
पेट खाली – नहि भरल ई
कर्मयोगक झुनझुना से
मृत्यु जन्मक से फलाफल
भोग दुख सानल कहै छी
गप्प नहि जानल कहै छी.

पुरुष होएब भेल पौरुष
अछि समन्वय संतुलन
काम कारी धर्म धुध्धुर
अर्थ अछि स्वीकार्य क्षण-क्षण
अनमना आखर प्रभाकर
सत्य सन छानल कहै छी
गप्प नहि जानल कहै छी.

सत्य सँ पृथक

मनुक्ख !
की - की बुझैत अछि ! अपना कें
सत्य सँ पृथक
असत्यमे बान्हल
सूतल किछु जागल
क्षणिक आवेग कें
परिवर्तनक कथानक मानल
मुदा ई की ?
खुजिते आँखि
लापता भ' जाइत अछि
मनुक्खक कल्पित पाँखि
धडामसँ खसैत
घ' लेल अछि
चट्टहि कोनो बाँहि
तथापि अतिरेकी कल्पनाक प्रमादे-
लगैए ओ केहन प्रवीण !
अपना आपकें
ठगैत रहबाकक
एहि निरंतरता मे
भ' जाइत अछि
ओ आन्हर, अकान
मनुक्खसँ भिन्न
पशुता दिनमान.

.... रहू पासमे

जिद करू नहि -
रहू पासमे
प्राण धेने
प्रणय सांसमे
छी अहीं गात-गति
कामना - कामिनी
उर - उरज मधु अहीं
लास - उल्लासमे.
जिद करू नहि-
रहू पासमे..

सुख कतेक भेल
बाजल कंठिन
स्पर्श अनुराग
लागल सुदिन
छी अहीं - प्राण-मन
रूप श्री षोडशी
मान-सम्मान सित
पूर्ण सहवासमे.
जिद करू नहि
रहू पासमे.

भोग, आरोग्य निधि
जीव जीवन सविधि
वास - विन्यास सुख
अंकमे, पाशमे
प्रश्न भय नहि उभय
स्निग्ध शरदिन्दु मन
न्यास अछि आँखिमे
भास, आभासमे.
जिद करू नहि
रहू पासमे.

सुखद संयोग अछि जीवन

हताशा नाम नहि आनू
पिपासा प्राण, प्रिय जानू
सकल आवेग धन भाषा
सरस सुस्वाद सुख मानू.
इजोतक लेल मन धधरा
निवारण कष्ट नहि कानू
भरल-पूरल सुमन उपवन!
सुखद संयोग अछि जीवन!!

कल्प संग-संग गल्प लागल
ध्याने धेने धर्म जागल
आशुता आकार प्रभाकर
बुद्धि विधु सुखमान लागल.
ज्ञान-धन विज्ञान कविता
सुख मनक अनुराग तागल.
एहन प्रतिहर्ष मन भावन !
सुखद संयोग अछि जीवन !!

मनोरथ यश-सुयश लौकिक
प्रपंचक आरि अछि भौतिक.
प्रतिष्ठा दाँव पर लागल
हेड़ाएल कर्मकृत यौगिक.
निवारक ब्रह्म धरि जानू
सकल परिवार धन पौतिक.
विपति धीरज अयन प्रकरण !
सुखद संयोग अछि जीवन !!

सरसता शब्द रस आदर
वृथा गरजू न हे बादर !
प्रयोजन पूर्णता-प्रियता
भरल-पूरल कहल सागर.
अभावक अछि कथा तैयो
धेने किछु अंक किछु बाहर.
सुखक अभिसार क्षण सावन !
सुखद संयोग अछि जीवन !!

ध्येय अछि धीमान् होएब

ज्योति चाही ज्योत्सना संग
ऊहि चाही भावना संग
जीवनक परिताप तापल
होम-हुत मन साधना संग.
ज्ञान अछि गतिशीलता लए
हेय नहि श्रीमान् होएब !
ध्येय अछि धीमान् होएब !!

संग अछि सब बाट लागल
अर्थकारक स्वार्थ जागल
भाग्य अछि संयोग सुख सन
शब्द संग-संग अर्थ तागल.
ध्यान धन अनुमान विधुता
श्रेय नहि भगवान् होएब !
ध्येय अछि धीमान् होएब !!

भेल नर ओ श्रेष्ठ जो सिद्धार्थ हो
लोकहित, लोकायतन, परमार्थ हो
हम दधीचिक हाड़ छी- चाही कहू
दान दूनू हाथ जौं निस्वार्थ हो.
इएह अछि पैघत्व शिवता
नहि स्पृहा धनवान होएब !
ध्येय अछि धीमान् होएब !!

की कहब स्वास्थ की आनंद की
गेयता व्यवहार रस अछि छंद ई
बहि रहल अविरल सरल मन
सेतु परमानन्द की ?
तृप्तिमूलक हरिकथा ई
लाग अछि विज्ञान होएब !
ध्यान अछि धीमान् होएब !!

अनुराग चाही

बेस किछु अनुराग चाही
फूल चाही, ताग चाही
भेंटता हरिहर घरे घर
उत्स चाही, जाग चाही..

श्लेष अछि संदेश लागल
ध्यान राखल, दृष्टि जागल.
भोग्यवीरा ई धरा अछि
पूर्ण नहि किछु भाग चाही..

ज्ञान घन अनमोल अक्षय
नहि भने किछु नहि कोनो भय
कटि रहल केहनो अदिनता
कष्ट नहि-सुख साग चाही..

व्यंजना संग लक्षणा किछु
इंदु प्रिय शरदिन्दु सुख.
शब्द सागर हाथ आखर
भाव उत्कल सिन्धु चाही

प्रश्न नहि हम की केलौं
की नहि केलौं.
आइयो लागल अहीमे
भाग्यश: अनुभाग चाही..

वासना निष्काम उत्तम
प्रेम पावन भेल नहि कम.
नहि अकिंचन, भिक्षु मन ई
वस्त्र फाटल ताग चाही..
बेस किछु अनुराग चाही !!

भेल की कारण न जानल

की कहब की भेल अनबन
चित्त चंचल व्यग्र अछि मन
बहि रहल अछि नाव सरिता
लिखि रहल अभिलेख पल क्षण
जानि नहि विश्राम कहिया-
थाकि तन ई खाट लागल !
भेल की कारण न जानल !!

शब्द श्रुति, सुरसरि, सरोवर
डूब दए देखाल धरोहर
योग निष्ठा युग्मता शिव
नारि-नर संसार घर-घर
नाम नहि परिचय मुदा ई
बाट बैसल क्लेश कानल !
भेल की कारण न जानल !!

व्यंजना विन्यास ऋतु रति
देह मन आभार परिचित
काम कहि उल्लास रसगर
बूझलहुँ सब ज्ञान उपकृत.
भेल से मारक सुनामी
बोध विस्मय संग लागल !
भेल की कारण न जानल !!

जीवनक व्यामोह पसरल पानि सन

बहि रहल मन मानलहुँ कारण कठिन
भ' रहल अपराध अप्रिय राति-दिन
देश एहि उपदेश सौंसे बाढ़ि आएल
नहि प्रभावी किन्तु किछुओ गप्प भिन्न.
बनि रहल नहि आत्मिक संबंध यौगिक
आकलन अछि लाभ सौंसे हानि सन!
जीवनक व्यामोह पसरल पानि सन !!

लोक आकुल हाथ धरि अधिकार आबए
देय किछु कंचा न तैयो कामना व्यापार बाढ़ए
भेल अछि धुरखेल पौरुख पार्थ लुज-पुज
व्यसन बैसब गप्प मारब माथ खाएब
चलि रहल निर्वाध संस्कृति अजगरी
बैसि जाएब बैसि पीएब पानि अन्न !
जीवनक व्यामोह पसरल पानि सन !!

फाग अछि अनुराग माधव राधिके प्रिय
आउ प्रियतम आउ बैसू रति-रमण हिय
अछि समर्पण स्नेहसित उल्लास झरझर
काम कहि अभिराम आकुल राम-सिय
अछि वसंतक राग ई अभिराम प्रिय
काम आतुर मधु मिलन आनंद क्षण!
जीवनक व्यामोह पसरल पानि सन !!

जीवनक अभिलेख आखर

की कहब कारण केहन की
कर्मफल पावन एहन की
भेल जीवन धन्य धीमहि–
ज्ञान भेंटल धन व्यसन ई.
शब्द माया-हेतु विधुता
साधना सुख संत मन ई.
दान एहि सम्मान आकर
द' रहल यजमान सादर !
जीवनक अभिलेख आखर !!

हर्ष अछि संघर्ष प्रतिपल
वारि, वारिध हेतु मृदुजल
धार हम मंझधार नैया
धीरता परिणाम उज्ज्वल
श्रम हमर अधिकार विनमय
बहि रहल विश्वास कलकल
कल्पतरु फल श्रम-परिश्रम
भरि रहल सुख-शांति गागर !
जीवनक अभिलेख आखर !!

कामना कविता लता प्रिय
कहि रहल भवितव्यता सित
कोन कारण क्लेश, करुणा
भोग बूझल व्यर्थ अप्रिय.
श्लेष अछि अनिवार्य दुख-सुख
नहि रुदन-रोदन अमिय
कार्य-कारण हेतु जानल
नद-नदी विस्तार सागर!
जीवनक अभिलेख आखर !!

के कहल परिणाम की सब
मोक्ष लए संग्राम की कब ?
कर्मणा संभाव्य शिवता
व्रत नियम श्रीराम ली जब.
जीवनक आशय निरूपण
सर्ग अछि उत्सर्ग भू-नभ
स्वर्ग लए संसार त्यागल
हाथ नहि अधिकार पाथर !
जीवनक अभिलेख आखर !!

व्यंजना, अभिव्यंजना आँवेग मन-
भावना संभावना कविता सृजन
दृष्टि मे बान्हल नुकाएल सृष्टि ई
वास सँ निर्वास धरि जीवन-मरण.
भ' रहल अर्पण, समर्पण सार ई
लोकहित उद्देश्य अछि मंगलकरण
हेतुकर साहित्य हितरक
द' रहल आनंद सादर !
जीवनक अभिलेख आखर !!

कार्य कारण हेतु- मति, मन

मान लय सम्मान बांटल
हर्ष अछि प्रतिहर्ष साटल
जीवनक आनंद उर्मिल
बहि रहल निर्वेद अविरल
अछि प्रयोजन ताकबा केर
आग्रही अभिराम कण-कण
कार्य कारण हेतु मति मन.

योग अछि संयोग सुन्दर
जानकी मन-प्राण रघुवर
निर्वसन कारण सिया की ?
जानता श्रीराम हरि-हर
के कहल की हेतु कारण
दृष्टि एहि अज्ञान क्षण-क्षण
कार्य कारण हेतु मति मन.

स्वार्थ सँ अभिभूत जग ई
ठगि रहल संसार ठग ई
क्लेशकर संदेश विनमय
भेल कलिमल बंधु सग ई
मानबा केर प्रश्न की नहि
भेल अछि अनुमान अनढ़न
कार्य कारण हेतु मति मन.

भोग अछि आधार निर्मम
कष्ट कारण अर्थ विभ्रम
व्यंजना बिधुता विभाकर
हित सहित साहित्य श्रीकर
ज्ञानधन भगवान वाचक
भेल कविता स्निग्ध रति सन.
कार्य कारण हेतु मति मन.

काम खलु काया कलुषता
विषय व्यापल मन विकलता
नहि परान्मुख पतन पौरुष
बोध विस्मय धन अबलता
भ' रहल विध्वंस तैयो
धर्म प्रभुता ढोल ढ़न ढ़न
कार्यकारण हेतु मति मन..

तदर्थ

बारिक अभावमे
भोज की भेल ?
कहिऔ की बाबू
कपारे बकलेल !!

हेल गेलौं हेल एलौं
कहिऔ की भेल खेलौं !
हकमय लए कुक्कुर सन
हमहूँ अलबेल !!

दशमी, दिवाली
फगुआ सुखाएल !
भेलै वसंत संत
साधु बुड़लेल !!

सुनबै की औजी
कहती की भौजी !
पकड़ए मे आबय नहि
छटछट अछि बेल !!

कहिऔ की बाबू -
कपारे बकलेल !!

जय हो, जय हो, जय हो

भक्तिभाव श्रृंगार समन्वय
कविता आखर अन्वय.
कवि कोकिल विद्यापति चिन्मय
जय हो, जय हो, जय हो !

भेल मैथिली धन्य-धन्य सन
सरस सरल कविता धन.
देसिल बयना रुचिकर जन-जन
श्रद्धांजलि अक्षय हो !!

अभिज्ञान सौन्दर्य शास्त्र अछि
विद्या सँ परिपूर्ण पात्र अछि.
अक्षुण्ण अछि अवदान कीर्ति जग
विद्यापति केर जय हो !
कवि कोकिल विद्यापति चिन्मय
जय हो, जय हो, जय हो !!

अन्वय-समन्वय

परिवर्तन प्रारूप काल कहि चाही किन्तु समन्वय !
मंगलमय परिणाम प्रयोजन तारतम्य हो अन्वय !!
कालजयी संदेश सरल हो
स्वच्छ शब्द मधुजल हो
लोकाचार प्रशस्त करए से
कारण करण सबल हो.

अनुगामी बिनु मार्ग न भेटल, कएल साधना संशय !
मंगलमय परिणाम प्रयोजन तारतम्य हो अन्वय !!
बदलि रहल साहित्य ललित ई
मरलै ज्योतिषशास्त्र फलित ई ?
वेद - व्यास इतिहास भेल कहि
मरल जा रहल छंद गीत ई ?

रहल अर्थ धरि आयोजन सब धानुख भेल धनंजय !
मंगलमय परिणाम प्रयोजन तारतम्य हो अन्वय !!
कहल कएल मे भेद जरूरी
नेता नारायण मजबूरी
धर्म संघ केर लोकतंत्र मे
चमकि रहल आतंक छूरी.

भागि कहाँ जाएब नहि बूझल फज्झति प्रभु सन अक्षय !
मंगलमय परिणाम प्रयोजन तारतम्य हो अन्वय !!
जन्म अकारथ मृत्यु हताशा
भेल पाणिनी हीन सुभाषा
खान-पान सम्मान सोमरस
सुखक नवल चकमक परिभाषा
मदिरालय मंदिरमे समता भेद-भाव अछि सै-सै !
मंगलमय परिणाम प्रयोजन तारतम्य हो अन्वव !!

जीवनक भाषा कहै छी

अछि सनातन सन कथा ई
जीव जंगम मन व्यथा की ?
गति-प्रगति जीवन सरित सन
पतन-प्रियता सुख कहै छी.
अछि एहन आनंद अनुभव
भोग्य अभिलाषा कहै छी !
जीवनक भाषा कहै छी !!

पुरुष अछि पुरुषार्थ धेने
अर्थ कामक स्वार्थ नेने
धर्म चर्चा आनुसंगिक
मोक्ष भेंटत ज्ञान भेने
हाथ अछि आखर प्रभाकर
ऊहि जिज्ञासा कहै छी !
जीवनक भाषा कहै छी !!

सार अछि संसार पसरल
सिन्धु, सरिता, मेघ मृदु जल
स्वाद आलिंगन मिलन मन
काल्हि जे नहि आइ छल !
काल ई विकराल बेढ़ब
भाग्य हम-पासा कहै छी !
जीवनक भाषा कहै छी !!

नहि कोनो किछु भ्रांति चाही
व्यर्थ रगड़ा, रोग ढ़ाही
बेर बीतल जा रहल अछि
भोग दगदग राति स्याही
श्लेष अछि संयोग विघटन
मूलधन आशा कहै छी !
जीवनक भाषा कहै छी !!

स्वर मधुर, रसगर मनोहर
शब्द ब्रह्मक रूप हरि हर
लाग जौं श्रीराम भेंटथिन
वास हिंनकर बास घर-घर
अछि विषय अंतस अलौकिक
मनक परिभाषा कहै छी.
जीवनक भाषा कहै छी

जीवनक निस्तार चाही

शब्द रस संचार चाही
सुख सरल संसार चाही
शेष अछि अवशेष ततबा
आर नहि विस्तार चाही.
प्रेय शिवता सन सरलता
की कहू की आर चाही !
जीवनक निस्तार चाही !!

वृत्तिका व्यापार लतरल-
मोह सब खेलक गरल-जल
भेल तृष्णा कष्ट कारण
द्वेष, पीड़ा, धूर्तता, छल.
माथ धेने धन विकलता
की कहू की आर चाही !
जीवनक निस्तार चाही !!

अछि केहन आखर कहू की
मौन कहिया धरि रहू की
क्लेश अछि विद्वेष पसरल
व्रत, नियम कतबा सहू की.
नहि शमन ततबा गरलता
की कहू की आर चाही !
जीवनक निस्तार चाही !!

प्रेयता-प्रियता प्रयोजन
भेल नहि प्रतिपाद्य जीवन
अछि जटिलता मार्ग सौंसे
हाथ धेने दुर्व्यसन

द्वन्द्व अछि द्विविधा तबाही
की कहू की आर चाही !
जीवनक निस्तार चाही !!

तरल चाही, भरल चाही
साग नहि ई जरल चाही
जीह अछि तरुआरि लपलप
रक्त जीवित-मरल चाही.
मोह मन-माया प्रबलता
की कहू की आर चाही !
जीवनक निस्तार चाही !!

संभावना

वेदना-विन्यास विह्वल
जन्म-जीवन योजना जल
याचना युग-युग रहल ई
कामना कहि मृत्यु लेसल
किन्तु भरलो पर भरल नहि
बल प्रबल मन कामना
लेश किछु संभावना !
श्लेष अछि संभावना !!

के कहत अधलाह की सब !
नीक सुन्दर वाह की सब
प्रश्न एहि न उत्तर देखल
श्वेत की अछि स्याह की सब !

तेँ मिहिर नहि अस्त कहियो
भेल दिन-दिन सामना
श्लेष अछि संभावना !!
नहि समापन नहि चरम ई
सत्य लागल भेल भ्रम की
भेल नहि निर्मूल माया
ध्यान लौकिक भेल क्रम ई
राग अछि मकरंद मधुकर
पूर्ण नहि परिपूर्ण कहियो
भाव अंतस अनमना सन
श्लेष अछि संभावना !!

बजैत अछि कविता

हम पढ़ने रही कतहु–
बजैत अछि कविता
झूठ आ सांचक
पोल खोलैत अछि कविता
निर्भय, निशंक
आ निरूपित शब्दक बौछार करैत
अमृत रस सँ
भाव-अनुभावक/मधुर-मनोहर स्वर
वर्णसँ टेबा-टेबी छूबि
कहि दैत अछि मनोभाव
अनठिओ सँ भ' जाएत अछि
निकटता साभार
डोलि जाएत अछि आसन
देवाधि इन्द्रक
देखि शब्दक कालजयी साज-श्रृंगार
शब्दक माया-महिमा दुनू
अगम अछि अपार.

जखने चाहैत अछि ओ
उतरि अबैत अछि चट्टहि
आँखिक आ पाँखिक बीच-
मन, सुमन केर शतदल, सुरभिममी
अभिसारिकाक मन-प्राण मे चुप्पे
आबस! भ' जाएत अछि
सम्मोहनक इतिवृत्ति.

रस, छंद, भाव, विभाव-
राग-अनुराग
चुटकी मे समेने
ललित कलाग्राही कलमक
नोकसँ खेलैत रहैत अछि ओ
काव्य, सृजनक खेल एहिना

शब्द रंग, बिरंगक
कुसुम-कोपलसँ मुक्त
बहरा जाएत अछि-
आ ल' लैत अछि जन्म
एकटा शिशु कविता !
एकटा नव कविता !!

कविता!
तुंग-शृंग
समुद्र तल अछि
नदी-नदक पर्याय
शाकुंतलम् कालिदास
मानस-तुलसी दल अछि.
कविता !
पचि गेल त' सरल
नहि त' गूढ़ गरल अछि शिवशंकरक
चन्दन वनक विषधर नाग सेहो
एकरा अनायास नहि छेड़ू
कामदेव धरि भस्म भ' गेल छथि/भ्रम पालने
कविताक आदि पुरोहितके
सम्मोहनक झांसा डालने.

कविता !
जीवनक नैसर्गिक कहानी अछि
सरस-सुरवाणी अछि
बाल-वृद्धक संगी
सिद्ध साधकक अमृत रस-रानी अछि

कविता !
सारस्वत अछि !
स्वाभिमानी अछि !!

बाढ़ि

कठिन भेल अछि
जीवनक निस्तार.
मृत्यु शक्तिमान लगैत अछि
पानि पनिबट्टे/बहबाक परंपरा तोड़ैत
नाश विनाश आ सत्यानाशक
विद्रूप कथानक भ' गेल अछि.
प्राकृतिक मति-विपर्ययक
एहि जुगुप्सित गाथा केर
जुनि पूछू हाल
सौंसे पूर्वांचल बिहारक
अपूर्व बाढ़िसँ/अभूतपूर्व भेल अछि.
टूटि गेल सबटा मर्यादा पानिक
प्राणतत्वक आत्मा–
बताह आ घताह भेल
प्रश्तर जल राशि कोशीक
फुलेने अछि पेट देखू
कोनो अलच्छ मौँगी सन भयंकर
भेल अछि दोषी
गीड़ि गेल समवेत भाव मे
मनुक्खक कालजयी जिजीविषा
आ पुरुषार्थ
भदवरियाक ई प्रलयंकारी बाढ़ि कोशीक
बहि गेल खर-पतवार सन
घर-आंगन/जलक न्यायार्थ
टूटि रहल हारल-मारल तृषा !
जी रहल अछि
निष्प्राण शरीर
विवशता केर असहाय मूर्ति भेल.
सरकार बेर-बेर
बाढ़िसँ पीड़ित-प्रताड़ित
मानवता केर दशा-दुर्दशा
सम्हारै लए विचारवान अछि
देखैत नहि ही अहाँ !
सौंसे अखबार दान-अनुदान सँ भरल
विज्ञापन पर ठाढ़ अछि
की करब अहाँ–
जिबा-मरबाक प्रक्रिया/बाढ़िमे एहिना
कोशीक वरदान अछि.
बाढ़ि एनाइ दुर्निवार
बिहारक भौगोलिक चर्या थिक
मुदा सुनामी सन
संस्कृति विनाशक
नव अभिज्ञान अछि अपन मानू
कोढ़ि अछि खाज धेने–
कानू त' कानू..

आर कहू की चाही

प्रासंगिक बनि सकी कालवत
आर कहू की चाही
संबंधक संयोग सरस सन
भव्य भाव संवाही.
आनन्दक अनुमान पान प्रिय
हृदय वियोगी राही !
आर कहू की चाही !!

जीवन जटिल बोध अछि विस्मय
जानल-सुनल सदेखल
भेल कात करवट मन मूनल
नाम प्रवाह-प्रवाही
सिद्ध संतकेर कथा-कहानी
किछु सूखा किछु दाही !
आर कहू की चाही !!

अंधकार मे ओज-खोज अछि
ज्ञान, पएर, मन चंचल
बहल जा रहल वेग पकड़ने
जीवन आवाजाही.
रहल अकिंचन मनवां मानू
कागज, कलम ओ स्याही !
आर कहू की चाही !!

कठिन साधना एकाकी सन
भोगल कहल कठिन किछु
ई अन्हार नारी सन दगदग
होइ अछि बाहां-बाहीं
शब्द गीत-संगीत कहाबए
ताधिन, ताधिन-हाँही !
आर कहू की चाही !!

विद्यापति

व्यंजना विन्यस्त रस माधुर्य अनुपम
शब्द शेखर स्तुत्य विद्यापति शिवक सम.
भेल मिथिला माटि कण-कण ज्ञानमय
ऋषि, मुनिक ई गेह-सीते सत्य अधिगम.
भेल जिनकर हास उगना रूप शिव-शिव
अर्थवत्ता पद प्रखर शृंगार संगम..

भक्ति औ शृंगार साधन साध्य सन
कृष्ण-राधा, शिव-शिवा विश्वास धन.
लिखल की की नहि कथा संवेग रतिपति
भ' रहल परिपाक प्रेमक ऊहि क्षण-क्षण.
दासता स्वीकार कएलनि जाह्नवी जेहि लेले-ओ
देल कहि अमरत्व अक्षय यश विलक्षण..

लाक्षणिक अधिकार आखर बोध विधिवत
भेल कविताई लता आबद्ध ऋतुवत.
काम सन अभिराम नहि पुरुषार्थ कोनो-
प्रेम व्यभिचारी न कथमपि क्लेशवत.
जीवनक अछि सत्य ई-संयोग घर-घर
ई समर्पण सन्धि पूरल नेम व्रत..

आशुता केतबा कही-काव्यगत रमणीयता
कवि ह्रदय चतरल महीसन लोकप्रियता.
अछि ललित लालित्य पद विद्यापतिक
भाव भास्वर छंद-रस प्रिय गेयता.
अछि गोसाओनि गीत अनुपम मैथिली
भेल मिथिला धन्य सुखकर भाव भनिता..

वस्तुत: साहित्य सब जन्मल बढ़ल कविता भेने
छथि पुरोहित आदि शिव सविता धेने.
प्राण कविता लोकहित, कल्याण, मंगल
गीत सँ संगीत साटल वाद्य लेने.
अछि अलंकृत काव्य चिर युवती ललित
कोकिल कवि पूरल कविता से राग-भोग प्रिय तहिने.

गजल

हमर पूजा, हमर परिचय, हमर शृंगार छी अपने !
सकल सौभाग्य, मन, काया रुधिर-संचार छी अपने !!

विषय किछु काम खलु कारी, पतन आनंद बड़ भारी !
निशा रसराज रस झरझर सुरति, सुख-सार छी अपने !!

प्रयोजन संग किछु कारण स्पृहा अनुराग नहि एहिना !
करू रनिवास एहि आंगन-हमर परिवार छी अपने !!

विसंगति भेल हम मानल- क्षमा अपराध हम कानल !
निकटता आर किछु आनू हमर अधिकार छी अपने !!

सुनब हम एक नहि आगाँ अबल धीरज हमर डगमग !
संभारू वा जेना मारू - हमर सरकार छी अपने !!

विवेचन बेस आलोचन 'विजय' देखल-सुनल की नहि !
बहै छथि नीर नारायण-सुनल हम धार छी अपने !!

वासना अछि तेल-बाती जरि रहल अछि कामना !
हर्ष अछि अपकर्ष धेने संग किछु अवमानना !!

पौरुषक नहि हाल पूछू भेल अछि कारण करुण !
सारथी मन स्वार्थी बड़ व्यग्रता संभावना !!

मान सबटा हुँनक होएत जे रहै छथि माथ पर !
हम शिवक बसहा भने छी- आदमी छी नाम्ना !!

जरि रहल एहि दीप मे आगि कतबा के कहत !
से दिया पूजित तिरस्कृत राति भरि अछि सामना !!

कामिनी, कमनीयता सब कोश केर अछि शब्द सन !
भेल कखनहुँ देखि लेलहुँ सैह बूझू अनमना !!

नम्रता के अर्थ ई नहि- हास हो, परिहास हो !
जय-विजय सम्मान आखर कामना सद्भावना !!

ललित साहित्य धन जीवन व्यसन-विन्यास अछि कविता !
जलधि, अंबर, भुवन, भू धरि तिरोहित सांस अछि कविता !!

हृदय गदगद एहन रसगर सुघर रजनीश सुख निर्झर !
निकट कटि कामिनी लच-लच उरज उल्लास अछि कविता !!

त्रिलोचन माथ धरि गंगा सुवासित सिन्धु सरिता सँ !
समाहित अंक अभिलाषा प्रणय उच्छ्वास अछि कविता !!

ने किछु सीमा रहल बान्हल विषय की सब बनल पांती !
मधुप अंतस मधुरता तेँ अधर मधुमास अछि कविता !!

मनन-चिन्तन, निरंतरता कहू कर्ता केहन कबिरा !
कहल जे सब बनल पांती 'सबद' आकाश अछि कविता !!

'विजय' विश्वास अछि पूजा प्रयोजन भावना भगवन् !
सम्हारल बेग बड़ भारी सृजन सत्कार अछि कविता !!

धैर्य चाही छी त' किछु पाथर बनू !
की करब उपराग श्रुति-सागर बनू !!

दृष्टि वैभव माथ जे की आर चाही !
आधुनिक होइतहुँ कनेक आन्हर बनू !!

भेल अवसरवादिता अछि बेर आएल !
सिन्धु सोखब इष्ट जौं- बादर बनू !!

मति पिवर्यय नहि मनक ई व्याधि सन !
छी पुरुष बलवान-नहि कातर बनू !!

जानि नहि एहि जीवनक निस्तार की !
अछि विवशता की करब चाकर बनू !!

मान सबटा आइ केर इतिहास होएत !
एहि विजय-संदर्भ श्री-सादर बनू !!

कामना विस्तार नहि निस्तार चाही !
लब्धि एतबे अछि बहुत की आर चाही !!

अछि सुरति संसार मधुकर भेल मन !
कहि रहल बसहा शिवक दरबार चाही !!

कलि कलुष काया सुधाकर कामिनी सन !
कामना अनुराग संग मनुहार चाही !!

ज्ञान केर अतिरेक अतिशयता कठिन-
आइ घर-घर अछि जहर उपचार चाही !!

बड़ कठिन लिप्सा सम्हारल नहि सहज !
वासना सायुज्जता उपहार चाही !!

सब प्रतीकक पंक्ति धेने काव्य ई-
दोष धूमिल जे करए आचार चाही !!

की कहू जीवन केहन अछि द्वन्द्व ई !
नहि सहज गाओल सुमन सँ छन्द ई !!

एहि वसंतक माथ पर बैसाख बैसल !
झरल-झहरल जा रहल मकरंद ई !!

अंक पूरल भेल फागुन चैत चह-चह !
भेल शाकुन्तल कथा दुष्यंत ई !!

अछि पिपासा किन्तु कतबा के कहत !
नहि भरल मन मीत अलिकेर गंध ई !!

बेस आयोजन समन्वय संधि सन !
आइ पीड़ा काल्हि अछि आनंद ई !!

आर धेने धर्म भेंटल गोमुखी !
तेँ ससरबा लेल अछि अनुबंध ई !!

जीवनक कृत, कर्म अछि अवधान किछु !
द्वन्द्व उभरल मूक तैयो ज्ञान किछ !!

वेदना विष भेल मनकेर साधना !
उधि रहल अछि वर्जना निष्प्राण किछु !!

काल केर नियमावली जे पढ़ल जानल !
धन्य अछि से सैह धए निर्वाण किछु !!

कहि-कहाक' एहि कथा अवसाद होएत !
भेल मन पाथर भने भगवान किछु !!

अछि समन्वय ताकबा लए आत्मपद-
आत्मिक आनंदवर्धन काव्यगत सम्मान किछु !!

तेँ निवेदन अछि पुनः प्रतिकार एतबे !
ध्यान राखू ध्येय नहि अज्ञान किछु !!

अवधान = चित्त लगेबाक प्रक्रिया

शब्द समिति भने अर्थ अधिकार सब !
व्यंजना नील नभ शून्य संसार सब !!

जानलहुँ नहि स्वयं जग परीक्षित मुदा–
तर्क विद्या कठिन तेज-तर्रार सब !!

पद पराक्रम मुखर के कहत की कहू–
दंभ अछि बड़ सुघर मुग्ध दरबार सब !!

आइ साहित्य रुचिगर केहन जग विदित !
दर्प बान्हल विवश रूप बेकार सब !!

मेघ आषाढ़ आगम जलज उत्स बड़–
विन्दुश: सिन्धु मन अछि निराकार सब !!

अछि विजेता केहन हार नहि कंठ जे–
सत्य की अछि कहू झूठ व्यापार सब !!

कहू बाजू मनोरथ की सरित, सुख सार अनने छी !
नयन घन भेल अछि सावन हृदय उद्गार अनने छी !!

क्षरण क्षण-क्षण भने भासल पतन पुरुषार्थ हम जानल !
समापन मन-सुमन करिऔ अधर रस धार अनने छी !!

रहू एहिना रहब हमहूँ- प्रणय पूजा हमर सादर !
निवेदन वेदना आखर व्यथित संसार् अनने छी !!

कहू संगम केहन पावन त्रिधारा तीर्थ जल जीवन !
नयन घन जल ललित पूरित अमृत उपहार अनने छी !!

केहन वैकल्य नहि पूछू मिलन मधु कामना कसकस !
करू अधिकार सँ अर्पण क्षितिज अभिसार अनने छी !!

सुगम शीतल मनोहारी अहाँसन के कहू दोसर !
शरण चाही-वरण करिऔ 'विजय' मनुहार अनने छी !!

प्रश्न सदिखन सैह कारण की केहन !
वाचनिकता मूक हत-आहत एहन !!

दृष्टि पाथर भेल अछि बाजू कथी !
शब्दशाला धूसरित कुंठित व्यसन !!

व्यंजना, विन्यास रस- शृंगार सुख !
कामना अछि कामिनी सुखमान सन !!

भावना भगवान मानल भव्यता !
भक्ति अछि आसक्ति अन्तर्ध्यान सन !!

अछि गरल तैं भेल गंगाजल सुनू !
पी रहल शिव कहि सुधा कल्याण सन !!

शेष अछि संदेशे तैयो सान्त्वना !
कामना पूरत कहू अनुरक्त मन !!

अनुरक्त = आसक्त

मनन, चिंतन सदाशयता सुखद अभिलेख जीवन ई !
नयन अंजन निरंजनता सकल घर-देश जीवन ई !!

सहजता सन कहू की सब-कुटिलता ध्यान नहि आनल !
अमरता लेल संसाधन सुखक संदेश जीवन ई !!

रमण परिकल्पना ताकल पतन परिणाम हम माधव !
जलद टुपटुप खसल पूरल अखिल परिवेश जीवन ई !!

मनोरथ मन रहल बैसल शिवक बसहा बनल बूझू !
प्रबल अतिरंजना भगवन! रहल अवशेष जीवन ई !!

हंसै छी सुनि अहाँ हमरा लगेने मोल भाटी सन-
'विजय' विश्वास अधिकृत तैं रहल नहि क्लेश जीवन ई !!

ललित वैविध्य अछि अंतस प्रयोजन आर की बाजू !
रमनगर तीर्थसन कविता प्रयण उन्मेष जीवन ई !!

मन अशांत उद्वेग कठिन अछि !
राति कहू की दिन दुर्दिन अछि !!

माया, काया बाधक बहिया-
पृष्ठभूमि सौभाग्य मलिन अछि !!

हारल की अपनेसँ सब क्यो-
नहि मानी से गप्प भिन्न अछि !

रहल सरल नहि भागल दुष्कर-
सड़ल माँटि आसक्ति नलिन अछि !!

जन्म अकारथ स्वारथ सौंसे !
पराभूत परिणाम अदिन अछि !!

लागि केहन अछि आगि कहू की !
जरल जा रहल मन मधुवन अछि !!

मन सुमन प्राणप्रिय आचमन नेह सन !
रति-प्रकृति जाह्नवी काम विश्राम क्षण !!

तत्व शिव सार संसार पसरल प्रणय !
पूर्णता काम कहि युग्मता क्षय-क्षरण !!

की कहब व्यस्तता काज उभरै न किछु !
भोग आसक्ति नहि भाग्य मानल शरण !!

बहि रहल फागुनी मद मदन रोंम-रज !
रूप रजनीश छिड़िआ रहल मन-भवन !!

प्रेम अविधान आशय समागम उभय !
ऋतु रमण अनुसरण देह कारण-करण !!

आउ आसन धरू गात पसरल पड़ल-
कामना बलवती स्राव सुख निस्सरण !!

अविधान = बिन तौर-तरीकासँ कएल काज

हमर नाम परिचय पता, लापता सन !
बनल भार बहिया नियम व्रत प्रथा सन !!

केहन की नियोगी-वियोगक बहुलता !
रथी-सारथी पथ पतन रति यथा सन !!

बहल संग लागल कठिन कहि तपस्या !
बनू जड़ सुखक लेल करिऔ शिवासन !!

अमरता लता सन रहत नित्य हरिअर !
चाही समन्वय नदी बीच आसन !!

कहल कामना इन्दु, शरदिन्दु सुन्दर !
पूसक अन्हरिया सँ चैतक प्रकाशन !!

क्रिया, प्रक्रिया कर्म-कारण, निवारण !
भोगक अटल सन सटल सन प्रशासन !!

नियोगी = काम मे लागल

न कम सम, बहुत नहि समावेश चाही !
सधेने चली बेश ! - ऋण शेष चाही !!

समादर प्रियक प्राणसन प्राणप्रिय हम–
सरस रस सुधा जाह्नवी लेश चाही !!

विभव शब्द सागर भरल रूप आखर–
सुखक सार संयम-नियम श्लेष चाही !!

हमर दृष्टि लागल अहीं पर कहू किछु–
आतुर मिलन मन-हृदय-देश चाही !!

मनोरथ सधल नहि केहन साधना कहि !
धरू धैर्य थोड़बे- न उपदेश चाही !!

प्रयोजन प्रकृति जौं रतिक कामना प्रिय !
मिलन युग्म आनंद- आवेश चाही !!

महामन, महालय विजय-सार अपने !
रही, नहि रही- चर्च अवशेष चाही !!

हे आदिदेव, हे महादेव जीवन प्रकरण भू भव अनुपम !
हमहूँ चाकर आदर आखर कविता सविता शिव-शिव अधिगम !!

जीवन जानल सरगम स्वर क्रम सुरसरि सुरसर गति यति धयने !
बहि रहल बात मन संग साथ धए गंध-सुगंध हृदय गमगम !!

अनुमान कहब की सब कतबा कण-कण व्यापल विधुता शिवता !
संयोग मिलन अनहद सुखकर कहि काम ललित रति रत अनुगम !!

विश्वास हमर आशय अभिमत अछि ज्ञान अकान बहिर आन्हर !
यद्यपि बसहा बनि बैसल हम बूझल स्वामी शिव-शिव बमदम !!

अछि दोष केहन निर्दोष न क्यो दर्पण गुमसुम प्रतिरूप प्रखर !
मन मानस ताकि रहल माया आसक्ति, भक्ति अर्थक हरदम !!

चाही की की हमरा नहि कहि-निष्काम काम धरि अभिलाषा–
अछि भाव-प्रभाव भने धुध्धुर नाटक त्राटक तैयो नहि कम !!

नहि ध्यान समापन पर किछुओ मन लागल बेस पसार कठिन–
राखब धरि मान निवेदन अछि अब राखल नहि संभव संयम !!

अधिगम = ज्ञान, प्राप्ति
अनुगम = अनुयायी

हमर आशय सदाशयता समादर स्नेहसित भाषा !
निवेदित अछि हृदय मंगल मिलन माधुर्य अभिलाषा !!

सकारण अछि निकटता ई हमर संसार सब अपने !
करब स्वीकार धन आखर भरब, पूरब हमर आशा !!

विधाता जानि की लिखलनि पढ़ल से भेल की पांती ?
प्रवाचक मन भ्रमर व्याकुल जटिल जीवन कठिन स्वांसा !!

न जानल काज की कएलहुँ बचल अछि शेष की कतबा !
कहां धरि कामना सपना कहल नहि भेल परिभाषा !!

केहन प्रारूप कहि पौरुष पसारक अंत नहि सीमा !
न उत्तर प्रश्न अछि देखल न पूरल बंधु जिज्ञासा !!

सुखक संसार मन, मानस अधर अधिकार सारस्वत–
बनू रसराज रसग्राही व्यसन अनुराग मधुमासा !!

कहब की सुखक कल्पना किछु अहीं सन !
मनोरम, मुदित प्राण मधुपान मधुसन !!

भरल अछि गरल सिंधु संसार जानल !
मगन चन्द्रशेखर एहिक लेल क्षण-क्षण !!

कहाँ धरि कहू स्नेह सत्कार पूरक !
अहीं हेतु प्रियता-परिष्कार जीवन !!

प्रयोजन पसारक न अछि आब आरो !
समाधान कर्मक अपादान लक्षण !!

अहाँ जौं सुनब नहि सुनत के कथा ई ?
धरू हाथ हमरो - निहोरा निवेदन !!

समागम कथा रस सुनल कहि रहल छी !
अहीं हेतु हितकर अहीं विश्वमोहन !!

अपादान = विभाग

हमर सुख दीनता वैभव मनोरम क्लेश अछि थाती !
जरै अछि राति दिन धधरा मनक पीड़ा प्रणय पांती !!

सदाशिव भक्त ई तैयो हमर परिचय हमर शिवता !
हमर गौरी हमर सम्मुख सुनै छथि भोर मुख प्राती !!

मनोमालिन्य नहि किछुओ रुधिर गंगा हमर रग-रग–
प्रकाशक ऊहि अछि अंतस जरै अछि ज्ञान-धन बाती !!

अहाँ सन के हमर होएत न बूझल आन नहि माते !
हमर वंशज अहिंक बालक अहींक हम पौत्र हम नाती !!

हमर विश्वास नहि धुध्धुर 'विजय' बनि दास ई जानल !
अबल बल हम अहीं जानी विषय गज-ग्राह संघाती !!

विवशता भोग हम मानल सनातन अछि पुरातन ई –
कहल जानल हृदय मानस सुखक दुख आप्त अछि साथी !!

केहन भेल कारण निवारण न देखल !
कठिन धैर्य की कहि जेना प्राण बेधल !!

कहब दोष की सब विहित नहि हताशा !
मनाओल सहज नहि समाधान रूसल !!

विदित अछि पराभव कलुष काल सन किछु–
रहत आइ नहि काल्हि ई वस्तु फेंकल !!

पराक्रम उचित की ने समसामयिक जे–
इहो अर्थ ई नहि- एना माथ टेकल !!

एहन कोन वैभव कहू के अरजलनि?
पजरलनि जखन ऊहि आनन्द सेकल !!

बनी धीर, कर्मठ, कुशल कार्यकर्ता !
होएत सुफल साधना-ज्ञान लेसल !!

आस विश्वास मन ध्यान साधन पुनः !
हाथ अछि प्राण-प्रण ज्ञान चानन पुनः !!

आरती भारती भक्त भगवान कहि–
हम शरण लेल छी भेल चारण पुनः !!

व्यंजना एहि सृजन बिन्दु सन, इन्दु सन !
बहि रहल नभ नयन वृष्टि कारण पुनः !!

अछि निराशा भने मानलहुँ अंततः !
ज्ञान संग अछि सटल तर्क रावण पुनः !!

कष्ट वैभव जकर दुःख संसार बड़ !
भूख, भय, वेदना, भोग, पारण पुनः !!

नहि उपार्जन एहन कहि सकी मित्र जे–
शब्द दू चारि बस अछि अकारण पुनः !!

अछि कथी विस्मय कनेक संसार देखू !
भेल उपवन कांट-कुश अंबार देखू !!

नग्नता अछि आँखि पसरल नोर ओ–
लाज के नहि काज आधुनिक व्यवहार देखू !!

कथ्य नहि बूझल सहज कविताइ से–
पानि नहि द्रष्टव्य बैसल धार देखू !!

सर्जरी शब्दक क्रियापद दग्ध बड़ !
बूझला केर नहि प्रयोजन भावना-व्यापार देखू !!

जीवनक पुरुषार्थ सबटा अर्थपूरक आइ केर–
की करब कविता सुना जीवनक निस्तार देखू !!

अछि कठिन ताकल समन्वय संधि सुख–
छी भने निर्धन सुखी तेँ नहि कोनो दरबार देखू !!

विश्व विद्यापति सुनू सादर समादृत !
काव्यकेर रमणीयता साहित्य सित !!

शब्दशः मिथिला विभव वैभव कथा !
भए हरल चरचा निरंतर लोक हित !!

जीतलक जे शिव, शिवा कें भक्ति सँ !
आइ भास्वर भेल पुनि विद्या अमृत !!

शब्द केर सामर्थ्य कतबा के कहत !
हाथ लागल जे सुकृति ओ सर्वजित !!

दिव्यता, आह्लाद, अनुभव ज्ञान धन !
भाव संचारी सलिल अछि जग विदित !!

शब्द शिवता योगमाया मैथिली प्रिय !
आर बसहा कहि रहल अरचा चरित !!

कतेक यातना धन पराभव प्रबल की !
समय-साल प्रतिकूल दुखसँ भरल की !!

करी त' करी की कथा नहि निवारण !
प्रतीकार पौरुष कठिन की सरल की ?

केहन लब्धि कारी ललित रूप आखर !
कहल विद्वता व्याधि जीवन गरल की ?

कहाँ धरि प्रतीक्षित रहत आस बाजू !
खेती सुखेने कहू काज जल की ?

न चाही अमरता न धन-धान्य वैभव !
जानीं अहीं कामना हम धरल की !!

भरल एषणा पार संसार दुष्कर !
न जानल भने हम रहब नहि रहल की ?

केहन ध्यान अवधान अतिरेक अतिशय !
कठिन भेल जानल उदय की केहन क्षय !!

कारण निवारण उभय योग गति, मति–
अपन लब्धि तैयो रहल शून्य संशय !!

मनोरथ सबल सेतु साधन अबलता–
क्रिया-कर्म आयास, विश्वास किछु भय !!

भरल लोक आलोक अतिवादिता सँ !
कठिन ई प्रगति पार्थ संताप सै-सै !!

प्रयोजन सुयोजन सदाशिव सहजता !
चराचर धराधर, चिन्मात्र, चिन्मय !!

हमर लेखनी शब्दशः बोध हरि-हर !
माया हिंनक पार्श्व सादृश्य अन्वय !!

हमर आस आयास विश्वास अपने !
चलल जा रहल नद दिशा-न्यास अपने !!

मनोरथ, भगीरथ शिवक साधना सित !
करब पार मजधार छी पास अपने !!

चिदाकाश मधुमास मधुमक्त मति मन–
विभव अछि विविधता उदय-ह्रास अपने !!

खसल नीर, निर्माल्य निधि नोर जानल !
सकल स्रोत श्रुति विन्दु, विन्यास अपने !!

अजर रूप विधु व्याल वसु विश्वमोहन !
सदाशिव सदानन्द उर-स्वांस अपने !!

नमन विश्वकर्मा नायक-विनायक !
धराधर कृपाकर हमर खास अपने !!

अहीं जन्मदाता अहीं छी समापक !
हमर ध्यान-धन ज्ञान-आभास अपने !!

पराश्रित, परान्मुख, पराभूत जीवन !
कहू हम कथी हेतु कारण केहन मन !!

निविड़ न्यास तमतम हताहत हृदय हम !
शरण नहि कतौ कात कातर पहर क्षण !!

विवशता नदक ठौर ठहरल कहाँ जल !
ने भेटल जगह जीव-जीवन वृषण सन !!

पिपासा अनल स्रोत श्रुति ज्ञान झरकल !
रहल गति, प्रगति माँटि धप-धप क्षरण सन !!

केहन व्याधि विधिगत अपरिहार्य मानल !
न पाँनिक पता किछु मृगक मोह रन-वन !!

निराशा न ई आस बाजू कथी सब !
समाहित समाधान मन अधिगमन सन !!

अधिगमन = प्राप्ति
वृषण = इन्द्र, कर्ण, सांढ़

केहन अछि द्वन्द्व नहि पूछू हताशा हाथ बड़ भारी !
घुरल मारल फिरल मधुकर पिपासा रोग लाचारी !!

स्पृहा अनुराग अछि उत्थर प्रबल परिकल्पना लौकिक !
अहीं मारक, अहीं पोषक कहत की दास आभारी !!

रुदन-रोदन व्यसन धन-सन विभव विन्यास सुख छाया !
जरै अछि कामना धू-धू दुखी जग भेल नर-नारी !!

हमर मतिशून्यता देखू बनल वक्ता घुरै छी हम !
व्यसन-विस्तार अछि धुध्धुर सदाशयता फुटल थारी !!

सविधि पूजा भने कएलहुँ रहल निर्माल्य ई फेंकल !
धरब हम माथ ई तैयो करब की आब तैयारी !!

वसंतक आगमन सादर हमर आंगन हमर मानस-
निवेदित अछि 'विजय' आखर हमर मन फूल-फुलवारी !!

आउ बैसू कनी गप्प किछु आन हो !
मन उभय गीत गीतल मुदित प्राण हो !!

क्लेश अछि श्लेष रजनी-दिवा आप्त हम-
भोर सायं वयःसंधि सुखमान हो !!

रूप-रस-गंध यौवन अमर बोल सन !
देह आलम्ब मिश्रित मधुप तान हो !!

व्यंजना, लक्षणा काव्य कवि कर्म थिक !
प्रेम, परिपाक अभिधा सरस पान हो !!

की प्रयोजन कथी लेल भूपति कहू !
कामना कहि रहल मान-सम्मान हो !!

किछु कहल किछु सुनल नाम कविता लता !
ई त्रिवेणी धवल दिव्यधी-ज्ञान हो !!

की कहब हम कहू के सुनत बात ई !
कर्म फलहीन किछु गाछ बिन पात ई !!

अर्थ, अनुराग जीवन भरल नहि हृदय !
अरजलहुँ की कही रिक्त अछि हाथ ई !!

सृष्टिसँ पैघ आकार अछि आँखि केर !
इष्ट ताकब कठिन शोध धरि माथ ई !!

रूप-अनुरूप धन ठोप, चानन व्यसन-
न्यास कलिकल्प नहि शब्द मधु वात ई !!

ढोल-पिपही क्षणिक रात्रि बरिआत धरि !
हुत, हवन भेल की जरि रहल गात ई !!

शून्य सन श्रेष्ठता, श्रेयता आर की !
बिन्दु सँ सिन्धु, नभ इन्दु सँ प्राप्त ई !!

बिम्ब अछि एकटा- वस्तु अछि एकटा !
बचि रहल जे विषय कामना एकटा !!

चाहलहुँ हम बहुत मुक्ति माधव कहाँ !
ताकलहुँ कामिनी अनमना एकटा !!

हार उपहार शब्दक कथा वर्तनी !
गीत, कविता, कथा झुनझुना एकटा !!

भेल आकाशवत मन महाशून्य सन !
आसवन भू-भवन रवि जेना एकटा !!

व्यंजना अछि कतए व्यंग्य विन्यास बड़ !
की कही-नहि सहज कल्पना एकटा !!

दित अदित सब विदित हम कही की स्वयं !
रूप प्रारूप दू छवि जेना एकटा !!

केहन वैकल्य नहि पूछू लगैए काल किछु रूसल !
कठिन भांभट सम्हारल ई न छोड़ल होइए पोसल !!

एहन दुधर्ष अछि तृष्णा न बान्हल भेल से माया–
निवारण नाम नहि आगाँ जरै अछि आगि बिन लेसल !!

न रुचिकर दीनता किनको न क्यो शिव भक्त एहि आँगन !
अभावक हाल नहि पुछू केतौ सूखल केतौ तीलल !!

पड़ाएल विद्वता देशज विकासक रूप वैदेशिक !
समाहित उग्रता सौंसे न किछु मौलिक न किछु मंगल !!

जरै अछि दीप घर घर मे प्रकाशक ऊहि बड़ भारी !
इजोतक अछि कठिन अन्वय केहन कारी कथी उज्ज्वल !!

हमर निष्ठा हमर देवी हमर छी देवता अपने !
'विजय' अज्ञात हम आखर प्रवाचक शब्द धरि संबल !!

बेस किछु अनुराग चाही ऊहि चाही लाग चाही !
भेटता हरि हरि घरे घरे उत्स चाही जाग चाही !!

श्लेष अछि संदेश लागल ध्यान राखल दृष्टि जागल !
भोग्यवीरा ई धरा सुख पूर्ण नहि किछु भाग चाही !!

ज्ञान धन अनमोल अक्षय नहि भने किछु किन्तु नहि भय !
कटि रहल केहनो विकटता कष्ट नहि सुख-साग चाही !!

व्यंजना संग लक्षणा किछु इंदु प्रिय शरदिन्दु आँगन !
शब्द सागर हाथ आखर भाव सुन्दर राग चाही !!

वासना निष्काम उत्तम प्रेम ओ जे भेल निस्पृह !
नहि अकिंचन भिक्षु अछि मन वस्त्र फाटल-ताग चाही !!

प्रश्न नहि हम की केलौं की नहि केलौं-
आइओ लागल अहीं मे भाग नहि संभाग चाही !!

सार सारस्वत प्रवाहित आउ आँगन-मन खुजल !
भाव अछि संभावना सित नेह झर झर कण सुजल !!

की कहब प्रारब्ध की सब ज्ञान धन अनुमान सन !
प्राण लटकल बाट माया नहि नयन उन्मेष दू पल !!

नहि पता की नींक परिचय जानि नहि अधलाह हम !
अछि प्रकृति विन्यास ऋतुपति रति सुरति किछु गील भीजल !!

जीवनक आस्वाद अनुभव पूछिऔ मानस मधुप सँ !
घी पिबालए वर्जना नहि ओढ़िऔ बस बैसि कंबल !!

कल्पना कारक निवारक कार्य, कारण हेतु मन–
पाथरक परिकल्पना शव गति-प्रगति शिव बाहुबल !!

झूठ नहि बाजल विवशता दिव्य लौकिक विषय शिवता !
नाद अछि उन्माद बमबम भाव गंगे धार कल-कल !!

जीवनक सावधि जमा रानी, महल !
अर्थ यमुना, जानकी गंगा सुजल !!

काम किछु निष्काम कहि अनुराग चाही !
मोक्ष मधु मकरंद परमानन्द पल !!

की करब प्रिय बूझि धर्मक रूप रंग !
धार बनि बहिऔ बनत मजधार संबल !!

सान्त्वना धन अनमना आशा अहीं सन !
बढ़ि रहल संताप संग-संग मन मनोबल !!

शेष किछु संदेश आशय विधि नियम !
हाथ जे अछि साथ ओतबे शेष छल !!

शब्द बँटबा लेल व्याकुल कामना !
वर्ण बिधु विन्यास जगमग नभ धवल !!

आउ बैसू सुनू निधि निवेदन हमर !
प्राण प्रिय, प्राणधन प्रेम पावन हमर !!

एहि कथा क्लेश नहि किछु कहल शेष नहि !
रूप-रस वारुणी बोध सावन सुधर !!

कल्पना नहि कलाकृति विलक्षण अहाँ–
शब्द नहि भाव अछि भव्य कानन शिखर !!

कामना-कामिनी रति-सुरति सुख उभय !
नाम अछि काम ओ स्वाद बूझल भ्रमर !!

बंधनक पूर्णता पाश, उल्लास क्षण–
ई मिलन बोध प्रिय अछि पतन सुख निकर !!

जीवनक ज्योति जगमग अही सँ धवल !
शब्द साधन अहीं साधना अछि मुखर !!

निकर = झुंड, धन

विषय वस्तु किछुओ कहू नींक चिक्कन !
सोहाएत न अनढ़न कथा तर्क अप्पन !!

प्रयोजन गरल नहि मधुरता निवेदित !
परोसू, पसारू मधुप राग प्रणयन !!

सिंगारक विविधता केहन की उचित कहि–
लटक नहि ललाटक चानन विभव सन !!

पढ़ल ठोर आखर खुजल पंख नभ धरि !
सभक तार बान्हल विस्तार कण-कण !!

कठिन साधना अछि सलिल चित्त बान्हब !
संयम नियम संग बनू श्रेष्ठ हे मन !!

विद्यापतिक ज्ञान-गुण पुण्य हम सब !
समर्पित करू मान-सम्मान धी-धन !!

हमर अछि निवेदन न व्रण-क्रोध सखू !
विषय आर सब ध्यान मन बोध राखू !!

निराशा एहन की हताशा करत की !
जटिलता सरल हो तेहन शोध राखू !!

विषयगत न जे किछु तकर बेस चिन्ता !
टेटर भने माथ नहि क्वाथ राखू !!

प्रवासक व्यथा कटु कथासार एतबे !
तथागत बनू मान संबोधि राखू !!

सटत के कहू रूप-रस बिन अनेरे !
समावेश चाही - हृदय खोदि राखू !!

रुचिकर भने नहि प्रयोजन विवशता !
खुजत ग्रन्थि सोचू न अवरोध राखू !!

नहि कोनो उद्देश्य नहि आधार किछु !
अछि केहन व्यक्तित्व नहि आकार किछु !!

की करत शिवता, सरलता सिन्धु ओ-
बाम भेने भाग्य जानल व्यर्थ सन संसार किछु !!

भ' रहल उपहास - की इतिहास होएत ?
दीनता विद्या 'विजय' बेकार किछु !

मानलहुँ पीड़ा इहो सब मृत्यु धरि !
तेँ प्रथा पीअब पुरुष लाचार किछु !!

दोष हम की की कही जीवन गरल !
स्वाभिमानक हेतु दुख व्यवहार किछु !!

सान्त्वना तैयो हृदय अछि अनमना-
अछि भने आखर, एखन अनुदार किछु !!

जीवनक रसभोग मन मकरंद ताकल !
रोहनिक बरखा सुरति आनंद जागल !!

कामना अछि वासनामय कारुणिक किछु !
व्यसन अछि फाटल भने विश्वास तागल !!

चू रहल अछि बिन्दु माथक श्रम, शिविर !
साधना साधन बनल सुख-स्वाद पागल !!

भेल किछु नहि गेल की, नहि कथा उपराग ई-
ठाढ़ के रहला धरा एहि सत्य अछि संसार भागल !!

कल्पना आलोक प्रियतम जीवनक लालित्य सन !
षोडशी शृंगार अभिनवन प्राण-प्रिय सन नीक लागल !!

धार ई अविराम आगाँ गेह अछि हरि द्वार ई !
डूबि दय दय बाट ताकल घाट अछि नहि नाव लागल !!

हमर प्राणवत्ता हमर सार सागर !
निवेदित सरल बोध संसार सादर !!

बहल जा रहल अछि पवन सन प्रबल घन !
बनल मन बटोही निशाकर, दिवाकर !!

कथा सब सुनल सन पढ़ल पाठ धन-सन !
सभक राम मालिक अपन राम चाकर !!

विवश छी कथी लए विवशता न ओढ़ू !
रहू मुक्त उन्मुक्त कथा क्लेश पाथर !!

मनक भाव बूझल मनस्वी-तपस्वी !
कठिन पाठशाला कठिन ज्ञान आखर !!

हमर युग्मता लोभ अछि लाभ चाही !
भने हम अहीं घर अहीं हेतु आकर !!

भ' रहल अछि की कहू कारण केहन !
किछु हताहत वेदना अछि भेल धन !!

जरि रहल बाती पराती कामना कहि !
काम कारी मेघ भागल जा रहल मन !!

प्राणवत्ता लेल प्रण तोड़ल दुखद !
धार नहि धारक बनू सागर सरल सन !!

दृष्टि नहि दर्शन मुदा विन्यस्त वाणी !
अर्थ धरि उभरल न किछु वाचक मगन !!

कष्ट अछि सत्कार नहि कविता-कथा !
भाव बिन भगवान बान्हल के अयन !!

जीवनक चर्या, समागम, साधुता सित !
लालिमा-साहित्य बिधुता उन्नयन !!

हमर राम अभिराम सुखकर सनातन !
चरण हरि शरण हम व्यसन प्रीति पावन !!

मनक आर्द्रता कामना कहि रहल बिधु !
हुँनक दृष्टिप्रयता सुखद वृष्टि सावन !!

कृपाकर, कृपाधीश कृति पारलौकिक !
बनल हेतु विधि मोक्ष तेँ कंस, रावण !!

हृदय जानकी, पार्वती पार्श्वप्रियता !
सरस रस प्रवाहित भगीरथ भगी मन !!

कुतूहल केतक शांत संताप भव-भय !
हमर राम तोशक हमर छथि बिछाओन !!

कारण कठिन ज्ञान अवधान जानल !
चराचर चरित चारुता राम कारण !!

अवधान = चित्तवृत्तिक निरोध कए
एक ठाम लगाएब

कठिन मेल आषाढ़ सावन पड़ल अछि !
टूटल लड़ी पानि बरखा ढ़रल अछि !!

हेड़ाएल सभक खेत खरिहान-आँगन-
कहब की अदिन चूल्हि नहि जरि रहल अछि !!

समाधान किछु नहि प्रलय पानि अनहद !
विवशता बनल भाग्य संकट सजल अछि !!

नदी, नद दहाएल बहल सेतु शव सन !
मरण, जागरण आँखि नहि ढ़रि रहल अछि !!

केहन नांच नांगट प्रकृति रीति अनढ़न !
प्रणय छोड़ि पावस पुरुष पढ़ि रहल अछि !!

चलू चारुता धरि लता, गाछ तन-मन !
ललित-उल्लसित रति अधर चढ़ि रहल अछि !!

की कहब किनका कहब के कान देत !
जान लेबा लेल सब के जान देत !!

हम नदी सन बहि रहल छी धार धेने !
मोक्ष गंगा लेल के- की ध्यान देत ?

मेल नहि निस्पृह एहन माया पुरुष-
आस जौं आकाश अछि- के मान देत !!

जी रहल छी हम अकल्पित आगि सन !
की खबरि के पानि-जीवन दान देत !!

भेल निर्भय जी सकी यदि आर किछु !
ज्ञान किछु संभव सरल अनुमान देत !!

नहि रहल आयास नहि उत्साह ओ-
बेर बैसक भेल जय-विजय भगवान देत !!

आगमन सावन सुरभि ऋतु काम गीतल !
कामिनी कसकस सुरति घनश्याम तीतल !!

षोडशी शृंगार गमगम, मन मनोहर !
नींक लागल वारुणी सन घाम शीतल !!

जागि उठला शिव, शिवालय, श्रावणी !
मेल कमरथुआ भगीरथ धाम-जल !!

नहि रहल पर मन पड़त कज्जल कला !
प्रेयता कतबा कही- की आप बीतल !!

भेल ततबा सुख कहल-बाजल न संभव !
अभिगमन सावन सुहावन काम जीतल !!

भेल ठोरक रस सरस किछु कहि मदिर !
सावनक टपटप झरब आनन्द सीटल !!

विवश छी कहब की- केहन नीक लागल !
अधर आगि धधकल - रहल ठोर साटल !!

दरस सँ परस ऊहि छल आचमन धरि !
हमर काम अभिराम - सूतल न जागल !!

सकल कल्पना सार संसार रसगर-
सटल नहि शरीरे रहल खाट राखल !!

प्रसंगक कथा नहि व्यथा बोध जीवन !
हृदय तूर मन छल सुइक संग तागल !!

एहन भेल दिन दीनता सन विवशता !
भेलहुँ कात-करवट भने राति जागल !!

कठिन बड़ विवेचन सुखक श्रावणी सन !
कहल शोक, पीड़ा धेने हाथ भागल !!

मनोरम बहुत रमि सकए किन्तु मन जौं !
मधुर - माधुरी धरि अधर हेतु क्षण जौं !!

न जानी किएक नहि आगम-समागम-
न पूरल-भरल रिक्तता भाव धन जौं !!

मिलल जल जेना छी कथा की वियोगक !
अंबर हमर भूमि, विन्यास घन जौं !!

दोषक निवारण केहन भेल कारण !
प्रदोषक मिलन बेस दू-चारि क्षण जौं !!

दिवस लेल अवसान परिणाम जानल !
खुजल हाथ देखल जीवन क्षरण जौं !!

पसारक बटोरल सहज नहि कहल सन !
अन्हारक निमंत्रण इजोतक किरण जौं !!

जीवनक आस्वाद असगर लेल नहि !
कहल बड़ आसान - खेलल भेल नहि !!

ई नदी धारा द्वयी द्वय तीरता सँ !
तोड़लक अछि मद मही ई खेल नहि !!

राति दिन संभव कहू की एक सन ?
हिम, अनल, जल, ज्योति जगमग तेल नहि !!

इएह अछि अपयश, अयश, दुर्भाग्य सन !
आर कहि कारा कि कोनो जेल नहि !!

भेल की पूरल मनोरथ प्राणप्रियता !
प्रश्न एहि उत्तर कठिन धुरखेल नहि !!

किन्तु, किंवा की कही बाजल उचित की !!
बेस रस्ता घरक सुन्दर बाट रेलमपेल नहि !!

अछि केहन प्रारब्ध नहि उपलब्ध किछु !
एषणा विन्यास छल-छल वासना प्रतिबद्ध किछु !!

ई उदय नहि अस्त निश्चय रवि जकाँ-
भोर सायं भ' रहल अछि कालिमा आबद्ध किछु !!

कहि रहल छी कष्ट ई संचित पुरातन !
पूर्वकल्पक कल्पना कटु वेदना कहि दग्ध किछु !!

आइ केर पुरुषार्थ सबटा अर्थमूलक अर्थवत् !
अर्थ लए तेँ सब विहित पाइ सुख-प्रारब्ध किछु !!

जीवनक जंजालसँ आजिज भने संसार ई !
से विवशता की केहन हाथ नहि जौं लब्ध किछु !!

व्यंजना ताकल घुरी हम सान्तवना सुखकर भ्रमर !
जय-विजय रेखा सनक ई लागल-मिटल संबंध किछु !!

फेर शब्दक तूलिका कारी लगै अछि !
की कहू निजगी केहन भारी लगै अछि !!

हम ललिल साहित्य धेने तेँ मगन-
तप फलप्रद भाव संचारी लगै अछि !!

जीवनक इतिवृत्ति छलकल नभ-नयन !
भू-गगन संतृप्त अविकारी लगै अछि !!

वासना विस्तार कुंतल रति-प्रिया-
मधुप मानव भेल दरबारी लगै अछि !!

व्यग्रता संताप सुख-दुख कालवत !
नहि अटल-दुर्बोध घरबारी लगै अछि !!

सोच पसरल जा रहल सरिता- लता !
नग्नता स्वीकार्य व्यभिचारी लगै अछि !!

अछि केहन निर्माण, रुचि, रचना नवल-
छंद रस, मकरंद नहि व्यर्थ फुलवारी लगै अछि !!

मन कहै अछि बेस किछु आनंद चाही !
भ' सकय अंतस मुदित - रस-छंद चाही !!

जानलहुँ हम मित्र सब किछु सामयिक सन !
राज-पाटक काज की- श्रीकंद चाही !!

नहि भरल सरसी, सूरित की कामना मन !
पुष्प सौष्ठव मात्र नहि मकरंद चाही !!

दर्प सँ अभिभूत तैयो दर्पणक छाया सुनू-
रूप नहि अनुरूप तेँ की रूपसी अनुबंध चाही !!

नहि शमन अछि भेल कौतूहल केहन
ज्ञान लए नहि कान-लोचन बंद चाही !!

जीवनक स्वारथ मौलिक मानसिक भानल विभव
कामना पूरक प्रयोजन बंधु परमानन्द चाही !!

जानि नहि सुख लेल अछि परिकल्पना की !
प्राप्ति रुचिकर पूर्णता अभिव्यंजना ई !!

के कहल किनका मिलन छल जे स्पृहा !
व्योम एहि भगवान पूरल मेघमाला अल्पना ई !!

मान्यता-आचार-आजुक पाइ, पौरुष मूल कहि !
धर्म निष्ठा मोक्ष मानल अर्थपूरक कल्पना ई !!

मानलहुँ धन शून्यता अरजल हमर थाती प्रबल !
नहि उचित भागल पड़ाएल लड़ि मरब अभ्यर्थना ई !!

भेल की त्रुटि मानलहुँ नहि कर्मफल कारण केहन !
विज्ञता पीड़ाक अभावक मानलहुँ हम अनमना ई !!

धैर्यगामी लेल शिवता, साधना सुखकर 'विजय' !
नियम-संयम कामना धन वृष्टि लए अछि अर्चना ई !!

जीवनक आशय सदाशय सूत्र शिवता सार किछु !
बेस बीतल शेष एहिना अभिलषित आभार किछु !!

द्वन्द्व अछि आनन्द तैयो क्लेश प्रियगर वारुणी !
पी रहल हम जानि गंगा मधु मदिर नहि आर किछु !!

व्यस्तता आसक्ति आखर व्यंजना शाला सुरति !
निस्सरित कविता सुकविता दर्प नहि अधिकार किछु !!

मोल मरला पर प्रकाशित साधना संसार एहि !
धैर्य जिनकर धार गंगे माथ शिव घर बार किछु !!

याचना किनका करी की सब तकै छथि मुँह हमर !
साध्य नहि स्वीकार्य अनुनय प्राप्ति लए उपहार किछु !!

आइ नहि त' काल्हि कविता त्रिपथगा तीरथ बनत !
अछि 'विजय' विश्वास भासित सर्ग शब्दाचार किछु !!

कथा नहि व्यथा आइ आनन्द कानन !
मुदित माधुरी अंक अधिकार आसन !!

व्यसन अछि सुमन संधि आवेग उर्मिल !
फलल साधना स्निग्ध शृंगार सुखसन !!

न चाही कोनो बीच बाधा निकटता !
निमंत्रण निशा प्रिय सुरति मन बिछाओन !!

विषय वेग-संवेग अभियान मंगल !
समन्वय सदाचार सुविचार कारण !!

सुदर्शन अहीं जीवनक ज्योति जगमग !
कठिन किन्तु बूझल अनल बीच सावन !!

अमरता विषयवस्तु पुरुषार्थपूरक !
क्रिया-प्रक्रिया पथ सुपथ भेल कण-कण !!

अविद शब्द पाथर पाथेय जानल !
हृदयहीनता अछि हृदय हेतु मानल !!

केहन कर्म पोसल पड़ल सिन्धु गुमसुम !
कठिन ज्ञान पाओल पराभूत सानल !!

विवर्जन नियति वर्जना भेल जीवन !
परिग्रह कहब की कथा कोन कानल !!

सभक स्वस्ति मौखिक मुखादेश भारी !
समय बाम प्रतिकूल अछि बेस तानल !!

पराभव पदासीन प्रतिकूल जंगम !
रहल एषणा द्वन्द्व संताप रान्हल !!

व्यथा बोध जीवन बधिर, मूक भाषा !
लगैए विवशता विधिक हाथ बान्हल !!

अविद = अज्ञानी

हमर नाम परिचय सादर सुरत हम !
नमन कोटिशः देश भारत भरत हम !!

ललित रूप वैविध्य अछि गाँव घर-घर !
नगर सब समुन्नत क्रिया-कर्म व्रत हम !!

हमर सभ्यता अति पुरातन, सनातन !
प्रगतिशील तैयो, विनयशील नत हम !!

समर मे हमर शौर्य सिद्धान्त संबल !
तिरंगा हमर प्राणप्रिय एकमत हम !!

सदाचार, सुविचार, संयम सुरक्षा !
बहुरूपता लौह, पारद, शरद हम !!

वैविध्य व्यंजक विविध रूप आखर !
लालित्य-लावण्य उल्लासरत हम !!

हमर स्वाभिमानक कथा लोमहर्षक !
कएल त्याग उत्सर्ग वाणीवरद हम !!

विविधता हमर धर्म प्रारूप रुचिकर !
हमर लोक परिवार ऐकिक सुमत हम !!

हमर आकलन क' रहल आइ दुनिया !
प्रयोजन सभक कार्य संसारवत हम !!

लिखल प्रारब्ध नहि जानल पढ़ल नहि होइए आखर !
सुनल सरकार छथि रूसल कथी लए नोर ई झरझर !!

पिपासा वासना उत्कल कठिन धधरा अनल अंतस !
जरल नहि क्लेश की कारण दिया बाती केहन घर-घर !!

कएल की की मनोरथ लए भगीरथ साधना की सब !
बहारल रोज फुलवारी वसंतक बाट कहि पतझड़ !!

न जानल सत्य हम माधव जटिल द्विविधा रहल संशय !
केहन पाथर केहन पूजा केहन भूधर केहन अंबर ?

कहब हम फेर नहि सीमा असीमित दृष्टि, मन, माया !
समेटल कामना सुखकर पुजारी सिद्ध सुत शंकर !!

प्रकाशक ऊहि आराधन 'विजय' विश्वास धन साधन !
अलख निर्वाण पथगामी सुलभ सुखधाम विश्वंभर !!

अछि केहन विश्वास फल ताकी घुरी हम !
धीमता धिक्कार छी छी वेदना बांचल फिरी हम !!

तोड़बा लए भ्रम विवश अज्ञानता थाती हमर !
मेघ सन घुरिआ रहल मन धैर्य लए की सब धरी हम ?

कामना बाती बनल अछि जरि रहल जीवन तरल !
तम तिरोहित मिहिर मन धन कामना की की करी हम ?

व्यंजना विन्यास मुखरित पूर्णिमा शरदिन्दु सन !
हम हमर कविता सुवासित अर्थ लए कतबा मरी हम ?

विज्ञता, विज्ञान विनमय दृष्टिमे अछि सृष्टि ई !
अछि एहन लोचन सुलोचन सिन्धु सब सरसी भरी हम !!

याचना लए हाथ पसरल माथ माते श्रीचरण !
सर्ग करिऔ पूर्ण अपने वर्ण निधि पांती भरी हम !!

साधना संवर्धना सित सार-सारस्वत सृजन-
बहि रहल अछि नीर निर्झर सिन्धु सरिता व्रत मिलन !!

ऊहि अछि उद्वेग अंतस कामना अछि बलवती !
मानसिक ई रोग वैभव गात अछि आहुति हवन !!

ध्येय अछि आधार प्रणयन कामिनी कविता 'विजय'
शब्द धन निर्धन पुजारी भावना धरि उन्नयन !!

स्वार्थसँ उन्मुक्त के सब दास हम माया महीपति !
करण-कारण काम व्यापल भेल लौकिक अनुकरण !!

न्यास अछि विन्यास कविता भव्यता भगवान कहि !
अछि केहन विरुदावली ई लोभ, लाभक आचमन !!

नहि कोनो अनुरक्तता आसक्तिसँ उपराग की !
जीवनक आशय निरूपण बन्हल बान्हल मन-भुवन !!

वारुणी वैभव जकर हो सिन्धु ओ वाचाल नहि !
अछि जतए संवेदना अंतस अनल छवि लाल कहि !!

शब्द सन सुन्दर न किछुओ शब्द अछि संसार ई !
बान्हबा लए शब्द माया डोरि लागल जाल एहि !!

रूप रस, श्रृंगार, सौष्ठव भावना भगवान सन !
भक्ति तेँ पूजन प्रयोजन जीवनक जंजाल नहि !!

अछि पिपासा की केहन पूछू कने ई सिन्धुसँ !
नहि अनादर नहि अवज्ञा वर्जना नहि हाल एहि !!

जे बहुश्रुत बंधु जतबा ज्ञान गंगा जल विमल !
भेल श्रुतिधर गा रहल ओ वेद-वाणी व्याल नहि !!

भेल उपकृत मन कतेक आराधना अवसर प्रणय !
शब्द संग शब्दार्थ ततबा अर्थ अगनित काल एहि !!

नहि कोनो संदेश अभिवन देश एहि उपदेश बड़ !
मरि रहल पाण्डित्य भूखे की कहब की क्लेश बड़ !!

जीवनक संलिप्तता सब व्यर्थ बूझल पाँनि सन !
बहि रहल अछि अश्रु अंतस दृश्य छलकल द्वेष बड़ !!

मानलहुँ हम कामना सब काल सन विकराल किछु !
साथ केतबा माथ बूझल हाथ धरि विनवेष बड़ !!

शब्द किछु संसार जिनकर व्यंजना हुँनकर सुनू !
लक्ष्मी धरि लापता अवधूत कलि कमलेश बड़ !!

दृश्य नहि बहुतो एहन सब ज्ञान अनुभवजन्य ई !
बेदना, विन्यास भरिगर भाग्यशः ई श्लेष बड़ !!

प्रश्न किछु सदिखन रहल अछि प्रश्न धरि !
के कहल पैघत्व की सब आदमी रूपेश बड़ !!

आधुनिकता आइ मुखरित ज्ञान अछि !
माथ नहि संकोच नांगट नाम्ना परिधान अछि !!

अव्ययी निर्लज्जता संबंधपूरक हेतु हम-
कलुष काया सोन सीटल दिव्यता अनुमान अछि !!

बेस छी अनुदार हम संपन्नता वैभव-विभव !
शून्यतासँ पूर्णता सन ज्ञान नहि अभिमान अछि !!

हम बटोही बाट श्रीमति संग लागल लोक किछु !
नहि कटै अछि हाथ लागल जानि की अवदान अछि !!

अछि सुधाश्रयता कठिन जीवन-मरण सब एषणा !
भागबाकेर मार्ग नहि- रहबो सहज आसान अछि !!

श्रेय की अछि प्रेम की सब की कहू की चारुता !
लाक्षणिक अभिव्यंजना शब्दार्थ अन्तर्ध्यान अछि !!

कहि रहल छी कनेक ध्यान धरियौ इम्हर !
देव - देवाधि देवी दयानिधि हमर !!

ग्लानि किनका कहू के सुनत कष्ट ई !
खा रहल छी जहर शब्द आठो पहर !!

सुख कतेक भेल अछि पथ पतन से ढ़रल !
वेग बड़ डेग मे जाह्नवी सिन्धु घर !!

व्यंजना जीवनक अर्थ अधिकार सँ !
पाइ पौरुष प्रणव प्राण धन बंधुवर !!

मन न मानल कथा जीव जग कहि रहल !
मान अछि शून्य सन स्वप्न लागल मुखर !!

चुप रहू आर नहि हँसि रहल लोक सब !
ध्यान-धन सब अहीं आस अछि चक्रधर !!

कंठ सूखल पाँनि बिन अंतस अनल !
बेस कोलाहल समस्या पेयजल !!

अन्नसँ सम्पन्न रहने होतए की ?
पानि ससरल जा रहल संग पानि तल !!

दोष किनकर की कहब सब देवता !
आइ पीबै योग्य नहि गंगा रहल !!

आर जनता क्षुब्ध सब अछि माथ धेने !
आधुनिकता क्लेश अछि ओतबे प्रबल !!

एकटा कारण विकृत पर्यावरण !
काटबामे लोक लागल वृक्ष-जंगल !!

बेस धो-धो चाटबालए स्वप्न सुन्दर !
अछि न आगां आइ जे सब काल्हि छल !!

की कहब, की सुनब शब्द व्यापार सब !
छद्म छल भाव दूषित आचार अब !!

क्लेश अछि सुप्त सुख मात्र अनुमान की !
माथ अछि क्वाथ दुर्दिन न प्रतिकार अब !!

सत्यसँ बेखबरि चलि रहल जीव-जग !
झूठ धन-धाम फल दू दुनी चारि अब !!

व्यस्तता राति-दिन व्यग्रता हाथ धरि !
माथ धेने रहू लब्धि उपराग अब !!

द्वंदकेर बंद ई छंद छलकल कलश !
किछु हृदय नहि रहल सब बनल धार अब !!

अर्थ तें शब्दकेर सिन्धु सन अव्ययी !
गप्प बूझल कठिन बुद्धि नहि शुद्ध अब !!

हारि कय मारि कय मन मनाबय पड़त !
एहि कुरुक्षेत्र मे बंधु आबय पड़त !!

धर्म धेने कुशल भक्ति लय भोग लय !
कर्म साधन कठिन श्रम देखाबय पड़त !!

मोह-माया जगक रौद्र छाहरि जेंका !
काँट नहि - गाछ तैं किछु लगाबय पड़त !!

आप्त होएत प्रणय-पूर्ण ऋतु वल्लरी !
क्यो चढत माथ धरि मुँह गड़ाबय पड़त !!

अछि अमावस केहन की लजाएल निशा !
दीप तम मे सुमन सँ जराबय पड़त !!

नहि प्रयोजन पसारक सुनू ध्यान सँ !
जे जेना अछि 'विजय' बोध लाबय पड़त !!

केहन कारण न किछु परिणाम ओ !
भेल नहि निर्द्वंद्व मन निष्काम ओ !!

शब्द पथ पाथेय अभिधा व्यंजना की !
अर्थ सबटा व्यर्थ विधि जौं बामओ !!

माथ एहि तैयो प्रवाहित वेदना-संवेदना !
भेल मन निर्झर नदी आगार सागर नाम ओ !!

मार्ग साधारण न ई सब लेल कहि !
छोड़ि रत्ना दास तुलसी लास जीवन राम ओ !!

कामना काटल कठिन कुश-काँट जीवन-
अक्षरक व्यापार अरजल की कहू की नाम ओ !!

व्यंग्यमे की की कहल छी व्यंग्य अपने !
धर्म हम धेने पड़ल जानि हरिहर धाम ओ !!

अछि कथा अभिनव सनातन ज्ञान ई !
सूक्त सुख बूझल कठिन अनुमान ई !!

भेल कारक पुरुष पौरुष ध्यान धन !
धर्म धधरा तापबा लए आदमी बलवान ई !!

जीवनक चारिम चरण हतप्रभ निराशा !
दीप बाचल तेल नहि मानिऔ अवसान ई !!

प्रेयता प्रियता परस्पर देयता आनन्द धन !
पात्रता ताकल घुरी हम जीवनक अभिमान ई !!

चारुता लावण्य मानल शब्द सन निरपेक्ष किछु !
अछि सदाशयता सुखद कृत कर्म कहि सम्मान ई !!

हम समन्वय संधिकेर छी आग्रही !
जोड़बा लए शब्द आखर चलि रहल संधान ई !!

आदमी साधन सुखक संसार जगमग !
अर्थवर्त्ता गुण मुखर व्यापार बड़ बड़ !!

कामना कमनीयता शृंगार सम्मुख षोडशी !
अछि कठिन ताकल सुखक अंबार पग-पग !!

दृष्टि कतबा दूरगामी भेल विस्मृत छी स्वयं !!
काल्पनिक अछि चारुता स्वीकार्य खब-खब !!

जीवनक उपसर्ग हकबक वृद्धता भय !
अछि विवशता, दीनता दुत्कार कब-कब !!

व्यंजना लालित्य रति रनिवास ललिता !
योग अछि क्षण-क्षण क्षरण निस्सार रग-रग !!

उड़ि रहल अछि लोक सगरो बनि चिड़ै !
नापि नहि पाओल स्वयं अछि खाट भर !!

केहन कारण निवारण नहि विवशता रोग बड़ भारी !
सुनत के वेदना ई सब कहब केहि लेल लाचारी !!

विधिक विन्यास पढ़बा लए जरूरी धैर्य पाथर सन !
जरै छथि रोज कहि दिनकर नियंता आन अधिकारी !!

विषय वैविध्य जग जगमग सुनल, देखल लिखल आखर !
इजोतक कामना केहि लए प्रकाशक जन्म अछि कारी !!

अमृत-विष योग अछि जीवन कहल तेँ योगमाया ई !
पिपासा सिन्धु अभिलाषा समाहित काम नर-नारी !!

ससरबा लेल मन आकुल, पसारक प्राण हारल सन !
रहल परिणाम असगर तेँ करत की भीरु तैयारी !!

युगक इतिहास सब आगाँ अमरता-वीरता बान्हल !
प्रयोजन प्रण समर्पण धरि फलाफल हेतु गिरधारी !!

हर्ष अछि उत्कर्ष वर्षा मेघ, जल !
रूप, रस, शृंगार भू-अंबर नवल !!

भेल पल आषाढ़ कविता कामिनी !
कहि रहल आसक्ति-रति अंतस अनल !!

अर्थ आशय व्यर्थ नहि मंगल मिलन !
वासना संवेग सुख झर-झर झरल !!

एहि प्रतिष्ठा लेल बरखा, वारुणी जल !
पेयता-प्रियता परस्पर संधि संबल !!

बेर बीतल ज्ञान भेने की करब-
बचि रहल परिताप शापित भेल नल !!

आर्द्र करबा लेल आकुल धन-गगन !
पड़ि रहू धरती जेंना धरि बाहुबल !!

चलू आस पूरल - समय-साल घूरल !
तृषा भेल दीपक - समय आँखि मूनल !!

बहल जा रहल नद न भेंटल कहाँ हद !
हृदय भेल अछि तूर मद-मोह तूरल !!

अहींक रज-कमल माथ गंगा बनेने !
सुवासित प्रकृति-काम संयोग पूरल !!

अहीं हेतु छी सार-संसार सौंसे-
समाहित अहीं मे प्रणय-पाश झूलल !!

सटल होंठ-रोमांच प्रियकर सुहाओन !
वसंतक मदिर राग- शृंगार घूरल !!

प्रयोजक कहाँ धरि शरीरक-कहत के !
'विजय' काम अभिराम जागल न सूतल !!

मन मुदित भेल अछि प्राण बलवान सन !
जीवनक ज्योति जगमग अभय ज्ञान सन !!

बहि रहल अछि नदी नीर धए तट-विटप !
भेल परमार्थ तप दान-अनुदान सन !!

जल्प संकल्प नहि द्वंद्व अभिहत सतत !
भिक्षु नरश्रेष्ठ-श्रीपति, मुकुल-चाँन सन!!

साधला सँ सधत कर्म-परित्राण कहि !
मोक्ष लए, मुक्ति लए देंह वरदान सन !!

हेतु अंतस अनल, जल, पवन, भू, गगन !
कहि मिलन भाग्यश: - भोग सुखमान सन !!

आत्मसत्ता जकर रूप-प्रारूप कहि-
भेल पौरुष सबल प्राप्ति अनुमान सन !!

अछि नमन कोटिश: मनु-महामन रथी !
रूप शत रूप विन्यास श्रीमान् सन !!

नहि पचाओल सहज मान-अपमान सब !
हर्ष अपकर्ष साटल अधर-प्राण सब !!

भ' रहल आकलन आइ निधि सब सविधि !
ध्यान सम्मान धरि-वस्तु निष्प्राण सब !!

जरि रहल कामना-तेल-बाती बनल !
व्यग्रता ताप-संताप-संधान सब !!

जीवनक आशुता-आसवन काज केहि-
रूप-प्रारूप चतरल-न फलवान सब !!

जे पढ़ल काल एहि विज्ञ-पंडित बनल !
अर्थ साधल, धरल श्रेष्ठतम ज्ञान सब !!

व्यंजना-लक्षणा कवि-कथा गौण सन !
हास-उपहास अरजल विषय म्लान सब !!

एहन सावन सरस पावन सजल आवेग छवि कलकल !
बहल जीवन सरित संयम जलज कहि जह्नु गंगाजल !!

विवेचन भेल बड़ मारी-पिपासित जीव, नर-नारी !
वियोगक हाल अछि दुखगर, मिलन लए मन पवन चंचल !!

सुवासित स्नेह संवर्धन पयोधर रक्त रवि पावक !
प्रयोजन अछि बहब झरझर नियंता मेघ हरि संबल !!

कठिन यौवन-विरह अनहद, नयन पाथर प्रणय निर्झर !
नियोजित काम कहि कातर रुधिर होंठक उधित उज्ज्वल !!

सदाशिव शांत छथि बैसल जलक अभिषेक अक्षत लए !
कहत के पार्वती रति लए बिछेने बाँहि मन उत्कल !!

हमर केशव, हमर कान्हाँ हमर आनन्द घन जहिना !
बरसता बीच कए हमरा बनल सायुज्य सुख परिमल !!

अहिंक रूप-रस गात आघात प्रियगर !
धरू बाँहि पर ठोर, मुँह गाल-सुखगर !!

उरज ओज धपधप अधर नहि सटल सन–
कहल किछु कथा ई चलू मीत प्रियवर !!

हमर कल्पना-अल्पना भूमि लोटल !
केहन सर्पिणी केश कटि-देश श्रीकर !!

सुनल वाद्य वीणा मुखर गोमुखी सन–
स्पृहा राग गीतल ढ़रल इन्दुशेखर !!

कारण कहू नहि निवारण प्रयोजन !
धरू काम मन मीत-हो विन्दु निर्झर !!

चलू बेस पल किछु उभयता-निकटता !
कहू आन के अछि अहाँसन रमनगर !!

कठिन किछु, सहज नहि लगा लेब पांती !
जरल जे कहल सुख जरल दीप बाती !!

मनक बिम्ब होएत केहन के कहल ई–
अहींसन, अहीं ओ–सरल स्वर प्रमाती !!

पखारल हृदय नित्य जल–जाल माया !
केहन घाट गन्तव्य–सब क्यो बराती !!

महामन, महापति, महाधीश हरि–हर !
हमर जीवनक प्राण निधि शब्द थाती !!

प्रबल कामना क्लेश अवशेष जीवन !
पियासल नदी, सिन्धु शरदिन्दु साथी !!

समापन करब की–सभारम्भ गड़बड़ !
पढ़ल जौ हृदय नहि–केहन हम समादी !!

हमर पूजा, हमर परिचय, हमर शृंगार छी अपने !
सकल सौभाग्य, मन, काया रुधिर-संचार छी अपने !!

विषय किछु काम खलु कारी, पतन आनंद बड़ भारी !
निशा रसराज रस झरझर सुरति, सुख-सार छी अपने !!

प्रयोजन संग किछु कारण स्पृहा अनुराग नहि एहिना !
करू रनिवास एहि आंगन-हमर परिवार छी अपने !!

विसंगति भेल हम मानल- क्षमा अपराध हम कानल !
निकटता आर किछु आनू हमर अधिकार छी अपने !!

सुनब हम एक नहि आनां अबल धीरज हमर [illegible] !
संभारू वा जेना मारू - हमर सरकार छी अपने !!

विवेचन वेस आलोचन 'विजय' देखल सुनल की नहि !
वहै छवि धीर नारायण-सुमन हम धार छी अपने !!